04 - सियासत का चक्रव्यूहः जहाँ रणनीति ही चुनौती बन गई

05 - पुनरीक्षण से जुड़ी चिंताओं का निराकरण आवश्यक

A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 05 मई, 2026

06 - शिक्षा विभाग के प्रयोगों ने बच्चों को कर दिया है शिक्षा से दूर

07 - भैरूंदा एसडीएम सहित राजस्व एवं पुलिस के...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 242, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

विशेष टिप्पणी

बंगाल विजय- शताब्दी वर्ष में मोदी-शाह का संघ को नायाब तोहफा !

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं। संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

राष्ट्रवादी विचारधारा के पैरोकार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में इससे बेहतर उपहार कोई हो नहीं सकता था कि जिसने बंग भूमि से उपजे राष्ट्रवादी चिंतन को अपनी वैचारिक आधार भूमि बनाया, उसी प्रांत में संघ की राजनीतिक शाखा भाजपा अपने दम पर सरकार बनाए। भले ही इस घड़ी को आने में डेढ़ सौ साल लगे हों। भाजपा ने पूरा चुनाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे पर लड़ा। पार्टी की बंगाल विजय कई मायनों में अहम है। जहां एक तरफ उसने कभी बरसों लाल रंग में रंगे बंगाल पर भगवा फहराकर समूचे उत्तर भारत में अपने अश्वमेघ यज्ञ की पूर्णाहुति दी है, वहीं देश में तमाम विपक्षी पार्टियों को अपनी राजनीति की दिशा और दशा पर पुनर्विचार करने पर विवश कर दिया है। यूं सोमवार को प. बंगाल सहित चार राज्यों और एक केन्द्रित शासित प्रदेश के विधानसभा चुनाव नतीजे आए। इनमें से तीन राज्यों में परिवर्तन की लहर साफ दिखी, लेकिन अगर अकेले बीजेपी की बात करें तो वह दो राज्यों में सत्ता में लौटी और एक राज्य में पहली बार सत्ता में आ रही है। यही नहीं, दक्षिण में जहां कमल अब भी खिलने के लिए सही सरोवर की तलाश में है, उस केरलम् में उसे कुछ सफलता मिली है। बंगाल के बाद सबसे चौंकाने वाला चुनाव परिणाम द्रविड़ राजनीति का गढ़ माने जाने वाले तमिलनाडु का है, जहां एक फिल्म अभिनेता थलपति विजय जोसेफ और उनकी नवोदित पार्टी टीवीके ने द्रविड़ राजनीति से हटकर अपनी कामयाबी का झंडा गाड़ा है। यह इस बात का संकेत है कि तमिलनाडु की जनता अब द्रविड़ राजनीति से इतर कोई रास्ता तलाशना चाहती है। हालांकि तमिलनाडु में भाजपा शून्य पर ही रही, लेकिन मानकर चलें कि बंगाल के बाद उसका अगला लक्ष्य तमिलनाडु ही होगा। इस हिसाब से थलपति विजय की पार्टी टीवीके के उदय को एक संक्रमण काल समझा जाना चाहिए।

बहरहाल, पश्चिम बंगाल में पूरा विधानसभा चुनाव किसी महायुद्ध की तर्ज पर और खूंखार जिद के साथ लड़ा गया। बंगाल बीते 15 सालों से मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी की अपनी राजनीति और उनकी पार्टी टीएमसी का अभेद्य गढ़ बना हुआ था। ममता ने पूर्व में कम्युनिस्टों के किले को ढहाकर पहला चुनाव भले ही भारी जन समर्थन से जीता हो, लेकिन उसके बाद उन्होंने सत्ता में बने रहने के हर हथकंडे अपनाए। जिसमें महिलाओं को रेवड़ी और अति तुष्टिकरण से लेकर गुंडागर्दी तक का हथकंडा शामिल था। विकास पर ध्यान देने की जगह उन्होंने भाजपा के राष्ट्रवाद का मुकाबला क्षेत्रीय और बंगाली अस्मिता से करने की भरपूर कोशिश की। हर बात पर पंगे लेना उनके जुझारू व्यक्तित्व का ऐसा पहलू रहा कि जिससे वहां के लोग ही ऊबने लगे थे। ममता मानकर चल रही थीं कि राज्य के लगभग तीस फीसदी मुस्लिम वोट और लगभग इतना ही हिंदू वोट पाकर वो अजेय रहेंगी। लेकिन वो खुद भी भवकनीपुर सीट से हार गईं। उधर भाजपा ने ममता के इस गढ़ को ढहाने के लिए साम-दाम-दंड-भेद हर तरीके का सहारा लिया। देश के चुनाव इतिहास में पहली बार इतने भारी पैमाने पर केन्द्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती की। ममता बैनर्जी ने इसे 'लोगों को डराने की चाल' भले ही बताया हो, लेकिन जिस तरह से बंगाल में वोटिंग का रिकॉर्ड बना, उससे साफ है कि ममता ने विरोधी वोट को किस दबंगई से दबा रखा था। जब विरोधी वोटर इतने दबाव में हो तो उसे मतदान के लिए बाहर निकालने के लिए वो तमाम तरीके आजमाना जरूरी था, जिनसे आम मतदाता में सुरक्षा का भाव जगे और उसे चुनाव पश्चात हिंसा से बचाने में सहायक हों। बंगाल के इस चुनाव को कई जुमलों ने भी पारिभाषित किया। मसलन इसे 'ममता बनाम जनता' चुनाव भी कहा गया। अगर इसे सही मानें तो उस जनता ने ही ममता को हरा दिया, जिसके समर्थन का वो आखिर तक दम भरती रहीं। यह नारा भी खूब चला 'पलटानों दरकार, बीजेपी सरकार।'

चुनावी रणनीति की दृष्टि से बात करें तो केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि परिस्थिति, लक्ष्य, रणनीति और उस पर ठोस अमल कराने में उनका कोई सानी नहीं है। इस बार चुनाव में ममता अपना एक भी एजेंडा सेट नहीं कर पाईं। उल्टे वह एसआईआर, घुसपैठिए, गुंडागर्दी और स्त्री-सुरक्षा के मुद्दों पर भाजपा की पिच पर ही खेलती नजर आईं और उसका अपने तरीके से प्रतिकार करती रहीं। जबकि 2011 के विस चुनाव में उन्होंने अपने प्लास्टर चढ़े पैर के साथ व्हीलचेयर पर बैठकर पूरे बंगाल में प्रचार कर जबर्दस्त सहानुभूति बटोरी थी और भारी बहुमत से सत्ता में लौटी थीं। लेकिन इस बार भाजपा ने उन्हें किसी तरह का 'विक्टिम कार्ड' खेलने का मौका नहीं दिया। उलटे उनके सारे स्क्रू कस दिए। हालांकि आलोचकों ने इस घेराबंदी को 'प्लेइंग लेवल' के खिलाफ माना। लेकिन भाजपा के रणनीतिकारों ने इसकी परवाह नहीं की। भाजपा की बंपर जीत में पार्टी कार्यकर्ताओं की मेहनत के अलावा पिछले दिनो पड़ोसी बांग्लादेश में हिंदुओं पर हुए हमले और नरसंहार ने भी पहली दफा बंगाली हिंदुओं को भीतर से हिला दिया। यह डर उनमें गहरे पैठ गया कि जनसांख्यिकी बदलाव यूं ही जारी रहा तो कल ऐसा उनके साथ भी हो सकता है। और यह डर केवल काल्पनिक नहीं था। इसी ने उस बंगाली भद्रलोक को भी विचलित कर दिया, जिसकी सामाजिक तथा धार्मिक सद्भाव की अलग परिभाषा और दुनिया रही है। लिहाजा बंगाल में पहली बार हिंदू वोट बड़े पैमाने पर ध्रुवीकृत हुआ।

इस चुनाव ने यह भी सिद्ध कर दिया कि अब नकद रेवड़ी योजनाएं चुनाव जीतने की सौ फीसदी गारंटी नहीं रहीं। वरना पैसा तो सभी सरकारें बांट रही थीं। लेकिन मतदाता और खासकर महिलाएं अब नकद नारायण के साथ सुशासन को भी जोड़कर देखने लगी हैं तो यह अच्छी बात है। दूसरे, यह व्यक्तिवादी और वंशवादी पार्टियों के लिए भी झटका है। इस हार के बाद ममता के भतीजे अभिषेक बैनर्जी और स्टालिन के बेटे उदयनिधि के राजनीतिक भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह लग गया है। तमिलनाडु में तो सनातन हिंदुत्व के खिलाफ झंडा बुलंद करने वाले मुख्यमंत्री स्टालिन ही हार गए हैं। तीसरे, बंगाल की इस पराजय ने राष्ट्रीय राजनीति में ममता के बढ़ते ग्राफ पर भी ग्रहण लगा दिया है। कहां वो दिल्ली पर विजय पताका फहराने वाली थी, कहां राइटर्स बिल्डिंग से उनका झंडा उतर गया है। उससे भी बड़ा झटका देश में समूचे विपक्ष और क्षेत्रीय पार्टियों को लगा है। उनके सामने अब यह संकट खड़ा है कि वो आखिर किस तरह की राजनीति करें और कैसे अपना वजूद कैसे बचाए रखें। ये पार्टियां अभी तक अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद अथवा उत्तर दक्षिण की राजनीति करती आ रही थीं, जिसमें उन्हें सफलता भी मिल रही थी। लेकिन यह रास्ता उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत और आवश्यक विपक्ष की ओर नहीं ले जाता। क्योंकि भाजपा हजार हाथों से राजनीति करती है। संसाधन उसके पास हैं हीं। इसके अतिरिक्त देश के मुसलमानों को भी सोचना होगा कि किसी भी कीमत पर भाजपा को हराने की उनकी सोच उन्हे मुख्य धारा से किस तरह अलग-थलग कर रही है।

शरद की सुबह

चुप रहने से उस बेगैरत के
अहम की तुष्टि होती है
उचित जवाब न दे पाना
मुझे विचलित करता है
बोलना बहुत बार
मेरी हार का कारण बना
मुँह में छुरी रखने से
बेहतर है
छुरी सामने रखना
चुप्पी, जिस्म का चैन है
मौन मन का विक्षोभ
चुप नहीं मौन हूँ
और
एक शहंशाह लगातार
मेरी बेचैनी में शामिल है।

– शैलेन्द्र शरण

भाजपा ने चुकाया पितामहा का पितृऋण

मुखर्जी की धरती पर पहली बार खिला 'कमल'

● थलपति विजय ने तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में रच दिया इतिहास ● असम में तीसरी बार हिमंता सरकार, तो केरल में कांग्रेस गठबंधन

कोलकाता/गुवाहाटी/तिरुवनंतपुरम/पुंडुचेरी/चेन्नई (एजेंसी)। देश के 5 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में हुए विधानसभा चुनावों के सोमवार को नतीजे आए। इन चुनावों में पश्चिम बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु और केंद्र शासित प्रदेश पुंडुचेरी शामिल हैं।

रुझानों में बंगाल में बीजेपी पहली बार सरकार बनाती दिख रही है। वह 204 सीटों पर बढ़त बना ली थी। 30 सीटें जीत चुकी थी। वहीं, टीएमसी को झटका लगा है और उसने 83 का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाया और डबल डिजिट में सिमटती दिख रही है। असम में भाजपा, तमिलनाडु में डीएमके, केरल में कांग्रेस आगे थी। पश्चिम बंगाल में 293 सीटों के लिए काउंटिंग हो रही है। वहीं असम की 126 सीटों पर एकतरफा मामला देखने को मिल रहा था और यहां भाजपा 99 सीटों पर आगे चल रही है।

भाजपा समर्थकों ने ढोल-नगाड़े के साथ जश्न मनाया

असम और पश्चिम बंगाल चुनाव में शानदार प्रदर्शन के बाद बीजेपी समर्थकों में भारी उत्साह देखने को मिला। पार्टी के समर्थकों ने अभी से ही ढोल नगाड़े बजाकर अपनी खुशी जाहिर की। पश्चिम बंगाल के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की बढ़त के बाद कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह था। कोलकाता में भाजपा कार्यालय के बाहर 'कमला भोग' व 'झाल मुड़ी' जैसी मिठाइयां बांटी गईं। इसके साथ ही, भाजपा कार्यकर्ताओं ने 'जय श्री राम' के नारे लगाए। कोलकाता में पार्टी मुख्यालय के बाहर भाजपा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में पहुंचे हैं और जश्न मना रहे हैं। इसी क्रम में स्थानीय नेता नारायण चट्टोपाध्याय 'कमला भोग' व 'झाल मुड़ी' लेकर पहुंचे। उन्होंने सभी को 'झाल मुड़ी' खिलाई।

● **तमिलनाडु में टीवीके विजय ने सबको चौंकाया–** तमिलनाडु में एक्टर विजय की पार्टी टीवीके जबरदस्त प्रदर्शन करती नजर आ रही है। उसने सत्ताधारी डीएमके को पछाड़ते हुए 107 सीटों पर बढ़त बनाई हुई है, जबकि डीएमके 71 सीटों पर आगे चल रही है। थाला विजय जीत के बाद माता पिता से मिलने गए

● **असम में हिमंता बिस्व सरमा की हैट्रिक –** असम में चुनावी माहौल पूरी तरह गरम है। 126 विधानसभा सीटों पर हुए मतदान हुआ था। हिमंता की तीसरी बार सरकार बन रही है। इस बार असम में 85.38 प्रतिशत मतदान दर्ज हुआ, जो राज्य के इतिहास में सबसे ज्यादा रहा है। मुख्य मुकाबला मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा के नेतृत्व वाली भाजपा और कांग्रेस गठबंधन के बीच था। हिमंता बिस्व सरमा हैट्रिक बनाने की और थे। भाजपा यहां एकतरफा जीत की और थी।

● **पुंडुचेरी में कमल लहराया–** पुडुचेरी की 30 सीटों पर मतगणना हुई। और यहां बीजेपी 18 और कांग्रेस 7 सीटों पर आगे चल रही थी। यहा भी भाजपा सरकार बनाने जा रही थी।

● **केरलम में कांग्रेस नेतृत्व वाली यूडीएफ सत्ता के करीब –** केरलम की 140 सीटों पर वोटों की गिनती हो रही है और कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूडीएफ 100 सीटों पर आगे चल रही थी। वहीं लेफ्ट 35 सीटों के साथ पीछे चल रही है।

● **असम में कांग्रेस को बड़ा झटका, जोरहाट सीट से चुनाव हारे गौरव गोगोई–** असम में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। बीजेपी के हितेंद्र नाथ ने 23 वोटों के अंतर से हराया कांग्रेस नेता गौरव गोगोई जोरहाट सीट से हराया है। जानकारी के लिए बता दें कि गौरव असम की जोरहाट सीट से चुनाव लड़ रहे थे।

विजय की पार्टी टीवीके बहुमत के करीब

● सीएम स्टालिन 8000 वोटों से हारे

केरलम में 10 साल बाद कांग्रेस की वापसी

असम, तमिलनाडु, केरलम और पुंडुचेरी विधानसभा सीटों पर वोटों की गिनती हुई। 2 साल पहले बनी विजय की पार्टी नंबर वन हो गई है और बहुमत के करीब थी। इधर, तमिलनाडु के मौजूदा सीएम एमके स्टालिन कोलाथुर सीट से चुनाव हार गए हैं। इधर, केरलम में 10 साल बाद यूटीएफ सरकार की वापसी हो रही है। डीएफ में कांग्रेस, मुस्लिम लीग और केरल कांग्रेस के गुट शामिल हैं। कांग्रेस 62 सीटें जीत चुकी है। केरलम में डीएफ ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया था।

मध्यप्रदेश को बनाएंगे देश की मिल्क केपिटल: सीएम यादव

सरकार खरीदेगी दूध, पशुपालकों को दिलाएगी दूध का समुचित दाम, किसान कल्याण वर्ष में पशुपालकों और दूध उत्पादकों का भी करेंगे कल्याण

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश को बनाएंगे देश की मिल्क केपिटल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्वालियर बहुत पुण्य भूमि है, जहां प्राचीनकाल से गौवंश और गौपालन की समृद्ध परम्परा रही है। हम पशुपालन और डेयरी को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के मजबूत स्तंभ के रूप में तैयार कर रहे हैं। दुग्ध व्यवसाय हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह सभी पशुपालकों के आर्थिक स्वावलंबन का मजबूत माध्यम है। हम प्रदेश के हर किसान और पशुपालक को समृद्ध बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सरकार डेयरी क्षेत्र में नवाचार करते हुए निवेश भी बढ़ाने के लिए सभी प्रयास कर रही है। निवेश आयेगा, तो इस सेक्टर में

रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे। हम हमारे युवाओं को गांवों में ही रोजगार मुहैया कराने के लिए सभी बेहतर संभावनाओं पर फोकस कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश दुग्ध उत्पादन में भी अग्रणी राज्य बने, यही हमारा लक्ष्य है। पशुपालकों और दुग्ध उत्पादकों की आमदनी में वृद्धि करने के लिए हम मिशन मोड पर काम कर रहे हैं। प्रदेश में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार हर जरूरी कदम उठा रही है। हम अपने प्रयासों से मध्यप्रदेश को देश का मिल्क केपिटल बनाकर रहेंगे। इसके लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल, बेहतर प्रबंधन और सभी पशुपालकों एवं दुग्ध उत्पादकों की सक्रिय भागीदारी बेहद जरूरी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश को मिल्क केपिटल बनाने में ग्वालियर बड़ी भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को ग्वालियर में राज्य स्तरीय पशुपालक एवं दुग्ध उत्पादक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया।

हर ब्लाक में बनाया जा रहा है एक-एक वृंदावन ग्राम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पशुपालक प्रदेश की आर्थिक समृद्धि का प्रमुख आधार हैं। किसान कल्याण वर्ष में हमारी सरकार पशुपालकों और दुग्ध उत्पादकों के समग्र कल्याण में भी कोई कसर नहीं रखेगी। गाय का हो या भैंस का, सरकार पशुपालकों से सारा का सारा दूध खरीदेगी और इन्हें दूध का समुचित दाम भी दिलाएगी। मुख्यमंत्री ने अपील करते हुए कहा कि सभी पशुपालक स्वस्थ और उच्च कोटि का पशुधन पालें। सरकार की डा. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना का अधिकतम लाभ उठायें। पशुपालकों को हर संभव सहायता दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि गौवंश को पर्याप्त और बेहतर आहार मिले, इसके लिए दी जाने वाली सहायता राशि हमने 20 रूपए से बढ़ाकर 40 रूपए प्रति गौवंश कर दी है। प्रदेश के हर ब्लॉक में एक-एक वृंदावन ग्राम बनाया जा रहा है, जिससे दुग्ध उत्पादन और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा मिले। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान भाई कदापि चिंता न करें। प्रदेश में कहीं भी, किसी भी विकास अधोसंरचना निर्माण के लिए यदि सरकार किसानों से उनकी जमीन लेगी, तो अब उन्हें चार गुना मुआवजा दिया जाएगा। प्रदेश के विकास में सहयोगी किसानों के प्रति यही हमारी कृतज्ञता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 05 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

प्रचंड जीत पर पीएम मोदी बोले

पश्चिम बंगाल में कमल खिला, कार्यकर्ताओं के संघर्ष को सलाम

● बंगाल-असम, पुंडुचेरी में भाजपा की जीत पर दिल्ली में जश्न ● बंगाल में मिली जीत ऐतिहासिक है : भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन

नईदिल्ली (एजेंसी)। भाजपा का 5 राज्यों में से 3 (पश्चिम बंगाल, असम और पुंडुचेरी) में सरकार बनना तय है। केरल में कांग्रेस और तमिलनाडु में एक्टर विजय की टीवीके सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय पहुंचे और कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। पार्टी अध्यक्ष नितिन नवीन और गृह मंत्री अमित शाह पार्टी मुख्यालय पहुंच चुके थे। इससे पहले पीएम मोदी ने पोस्ट में लिखा-भाजपा की पश्चिम बंगाल में ऐतिहासिक जीत अनगिनत कार्यकर्ताओं के पीढ़ियों से किए गए प्रयासों और संघर्षों के बिना संभव नहीं होती। मैं उन सभी को नमन करता हूं।

● बंगाल में कमल खिल गया

पश्चिम बंगाल में कमल खिल गया! 2026 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव हमेशा याद रखे जाएंगे। जनता की शक्ति की जीत हुई है और भाजपा की सुशासन की राजनीति सफल रही है। मैं पश्चिम बंगाल के हर एक व्यक्ति के सामने नतमस्तक हूं।

बाबरी मस्जिद बनवा रहे हुमायूं कबीर

जीत पर पीएम मोदी बोले

वर्षों की साधना सिद्ध हुई, गंगोत्री से गंगासागर तक कमल खिला

भाजपा का 5 राज्यों में से 3 (पश्चिम बंगाल, असम और पुंडुचेरी) में सरकार बना रही है। भाजपा मुख्यालय में जश्न था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय पर कहा- आज का दिन ऐतिहासिक और अभूतपूर्व है। सालों की साधना जब सिद्धी में बदलती है तो चेहरे पर जो खुशी होती है वो खुशी में देशभर के कार्यकर्ताओं के चेहरे पर देख रहा हूं। एक कार्यकर्ता होने के नाते मैं भाजपा के हर कार्यकर्ता की खुशी में शामिल हूं। आज का ये दिन कई मायनों में खास है। ये देश के उज्जवल भविष्य की उद्घोषणा, भरोसे का दिन है। भरोसा भारत महान लोकतंत्र पर, भरोसा परफॉर्मेंस की पॉलिटिक्स पर, भरोसा एक भारत श्रेष्ठ भारत भावना पर।

संक्षिप्त समाचार

सुप्रीम कोर्ट का ट्रांसजेंडर संशोधन एक्ट पर केंद्र-राज्यों को नोटिस

● 6 हफ्ते में जवाब मांगा; सिंघवी बोले- संशोधन पहचान खुद तय करने का अधिकार छीनता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) संशोधन अधिनियम, 2026 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर केंद्र सरकार और सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को नोटिस जारी किया है। चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने इस मामले पर 6 हफ्ते के भीतर जवाब मांगा है। अब इस मामले की सुनवाई तीन जजों की बेंच करेगी।

सिंघवी बोले- नालशा जजमेंट के खिलाफ है नया संशोधन- याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी ने संशोधन पर कड़ी आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि यह संशोधन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से 'सेल्फ आइडेंटिफिकेशन' (अपनी पहचान खुद तय करने) का अधिकार छीनता है। यह 2014 के ऐतिहासिक नालशा जजमेंट के खिलाफ है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने खुद की लैंगिक पहचान चुनने को मौलिक अधिकार घोषित किया था।

सीजेआई ने पूछा-

क्या लोग फर्जी पहचान बनाकर फायदा नहीं उठाएंगे?

सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने सेल्फ आइडेंटिफिकेशन के अधिकार को लेकर कुछ चिंताएं जताईं। उन्होंने पूछा, 'क्या इससे कोई खतरा पैदा नहीं होता? क्या ऐसे लोग नहीं हो सकते जो ट्रांसजेंडर होने का दिखावा करें ताकि उन्हें इस समुदाय के लिए तय आरक्षण या विशेषाधिकारों का लाभ मिल सके?' इस पर सिंघवी ने जवाब दिया कि उनकी जानकारी के अनुसार ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए अभी कोई आरक्षण लागू नहीं है, इसलिए गलत इस्तेमाल की संभावना नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि अगर 0.01 प्रतिशत मामलों में दुरुपयोग की गुंजाइश है भी, तो इसके आधार पर बहुसंख्यक समुदाय के आर्टिकल 21 (जीवन और गरिमा का अधिकार) के अधिकार को सस्पेंड नहीं किया जा सकता।

अमेरिका ने ईरानी जहाज पाकिस्तान को सौंपा

● चीन से लौटते समय कब्जा किया था; यूएस नेवी होर्मुज में फंसे जहाजों को आज से रेस्क्यू करेगी

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी (एजेंसी)। अमेरिकी सेना ने जब्त किए गए ईरानी जहाज टूस्का को अब पाकिस्तान को सौंप दिया है। अब इस जहाज को उसके क्रू मेंबर के साथ वापस ईरान भेजा जाएगा। यह जानकारी अमेरिकी सेंट्रल कमांड के प्रवक्ता ने दी।

अमेरिका ने 21 अप्रैल को इस जहाज को पकड़ लिया था। यह चीन से लौट रहा था। तब अमेरिकी अधिकारियों ने दावा

किया था कि इस पर हथियार बनाने से जुड़े सामान लाए जा रहे थे। ईरान ने इस कार्रवाई की कड़ी आलोचना की थी और इसे समुद्री डकैती बताया था।

अमेरिका ने ईरानी जहाज को ऐसे समय पर रिलीज किया है जब कुछ ही घंटे पहले राष्ट्रपति ट्रम्प ने होर्मुज में फंसे जहाजों को सुरक्षित रास्ता देने के लिए नया अभियान शुरू करने का ऐलान किया है। ट्रम्प ने रविवार को सोशल मीडिया पर बताया कि कई देशों ने अमेरिका से मदद मांगी है।

प्रचंड जीत पर अमित शाह बोले

बंगालवासियों ने घुसपैठियों और उनके हितैषियों को ऐसा सबक सिखाया...

पश्चिम बंगाल में बीजेपी की शानदार प्रदर्शन पर गृहमंत्री अमित शाह ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि बंगालवासियों ने घुसपैठियों और उनके हितैषियों को ऐसा सबक सिखाया है, जिसे तुष्टीकरण की राजनीति करने वाली पार्टियां कभी भूल नहीं पाएंगी। बंगाल ने जिन आशाओं और आकांक्षाओं के साथ मोदी जी के नेतृत्व पर यह विश्वास जताया है, हम निश्चित रूप से उन्हें पूरा करेंगे।

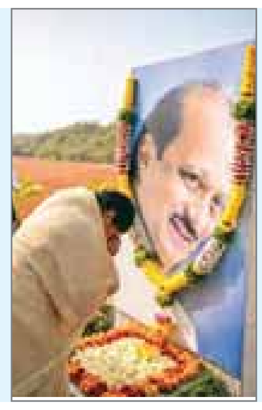

उपचुनावों में भी भाजपा का जलवा !

● सुनेत्रा पवार ने जीत का इतिहास बनाया, 2.18 लाख वोटों से जीतीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के 5 राज्यों की 7 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव के नतीजे लगभग आ गए हैं। महाराष्ट्र के बारामती सीट से एनसीपी उम्मीदवार सुनेत्रा पवार ने 2 लाख 18 हजार वोटों के अंतर से ऐतिहासिक जीत दर्ज की। यह अंतर भारत के इतिहास में अब तक का सबसे ज्यादा है। सुनेत्रा पूर्व डिप्टी सीएम अजित पवार की पत्नी हैं, जिनका 28 जनवरी 2026 को विमान हादसे में निधन हो गया था। महाराष्ट्र के राहुरी सीट से भाजपा के अक्षय कार्डिले जीत गए हैं। भाजपा ने गुजरात, नगालैंड और त्रिपुरा की 1-1 सीट भी जीत ली है। कर्नाटक के बागलकोट में कांग्रेस उम्मीदवार जीते हैं।

मध्य भारत शिक्षा समिति के संस्थापक श्रद्धेय सदाशिव गणेश गोखले का त्याग पूजनीय

विश्वविद्यालय शिक्षा का केन्द्र होने के साथ ही राष्ट्र निर्माण का भी स्थल होता है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

● ग्वालियर प्रदेश के एजुकेशन हब के रूप में नई पहचान गढ़ने की ओर अग्रसर है ● ऋषि गालव विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ ही आधुनिक विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शिक्षा भी मिलेगी ● ऋषि गालव विश्वविद्यालय की स्थापना में राज्य सरकार हरसंभव सहयोग करेगी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर प्राचीन काल से ही वीरता, विद्वता और कला का शिखर रही है। ऋषि गालव विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही ग्वालियर प्रदेश के एजुकेशन हब के रूप में नई पहचान गढ़ने की ओर अग्रसर है। एक विश्वविद्यालय शिक्षा का केन्द्र होने के साथ ही राष्ट्र निर्माण का भी स्थल होता है। ऋषि गालव के नाम पर बनने वाला यह संस्थान हमारी आने वाली पीढ़ियों को संस्कार, संस्कृति और कौशल से सुसज्जित कर राष्ट्र निर्माण का अग्रदूत बनाएगा। मध्य भारत शिक्षा समिति के संस्थापक श्रद्धेय सदाशिव गणेश गोखले का त्याग पूजनीय है, उन्होंने 85 वर्ष पहले 21 जुलाई 1941 को इस समिति नींव रख पराधीनता के कठिन काल में शिक्षा की अलख जगाने का संकल्प लिया। एक स्कूल से शुरू हुआ यह सफर चार महाविद्यालयों, पांच विद्यालयों और एक खेल अकादमी तक पहुंचा। वर्तमान में विभिन्न संस्थाओं में 5 हजार से अधिक विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। ऋषि गालव विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ आधुनिक विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शिक्षा भी छात्रों को मिलेगी। इसका लक्ष्य ऐसा नागरिक तैयार करना है, जो ज्ञानवान, चरित्रवान, नवाचारी और समाज के लिए उत्तरदायी हों। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ऋषि गालव विश्वविद्यालय के भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण, कंस वध के बाद शिक्षा ग्रहण करने उज्जैन पधारे और इस दौरान उन्होंने सुदामा से मित्रता की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की। यह इस बात का संकेत है कि गरीब-अमीर के बीच कोई परदा नहीं होना चाहिए। इसी समय हमें द्रोणाचार्य और द्रुपद के संदर्भ से शिक्षा के दुरूपयोग का उदाहरण भी प्राप्त होता है, परंतु नालंदा, तक्षशिला विश्वविद्यालयों के माध्यम से मानवता के मूल्यों के प्रसार का उदाहरण भी भारतीय ज्ञान परम्परा में विद्यमान है। इसी भाव का अनुसरण करते हुए प्रदेश में सांदीपनि विद्यालयों के माध्यम से नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों में योग्यता, दक्षता और चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

काले कोट के स्थान पर साफे के साथ भारतीय वेशभूषा में दीक्षांत समारोह की परम्परा की गई आरंभ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ऋषि गालव विश्वविद्यालय सरकार और समाज के साझा प्रयासों का एक सजीव उदाहरण बनेगा। राष्ट्रवादी विचारों को समर्पित इस विश्वविद्यालय की पूर्ण गौरव और गरिमा के साथ स्थापना में राज्य सरकार हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी। शिक्षा जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है, इसे आधार मानकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार किए हैं। इस क्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति को कुलगुरू का सम्मानजनक और श्रद्धापूर्ण संबोधन प्रदान किया गया है। संपूर्ण प्रदेश में गुरू पूर्णिमा का आयोजन भी इसी क्रम का नवाचार है। काले कोट के स्थान पर साफे के साथ भारतीय वेशभूषा में दीक्षांत समारोह की परम्परा आरंभ की गई। पहले कई-कई वर्षों तक दीक्षांत समारोह आयोजित नहीं होते थे, अब हर साल हर विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह किए जा रहे हैं।

केवल सैन्य शक्ति की बदौलत देश महान नहीं बनते : अशोक पाण्डे

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मध्यभारत प्रांत के संघचालक श्री अशोक पाण्डे ने कहा कोई भी देश केवल सैन्य शक्ति की बदौलत महान नहीं बन सकता। महान बनने के लिए शिक्षा व संस्कारों की जरूरत होती है। ऋषि गालव विश्वविद्यालय की स्थापना इसी भाव के साथ की जा रही है।

मनुष्य के साथ परिवेश का विकास ही वास्तविक विकास है: सुरेश सोनी

मुख्य वक्ता एवं राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री सुरेश सोनी ने कहा कि सड़क, भवन व अन्य अधोसंरचनाओं का निर्माण एवं आविष्कार केवल परिवेश का विकास है। वास्तविक विकास वह होता है जिसमें मनुष्य के साथ परिवेश का भी विकास हो। मनुष्य अधिक संवेदनशील, विचारवान व व्यापक दृष्टिकोण वाले हों। इसी पुनीत उद्देश्य को लेकर मध्यभारत शिक्षा समिति द्वारा ऋषि गालव विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। विश्वविद्यालय द्वारा रोजगारपरक शिक्षा के साथ-साथ मनुष्य के चरित्र निर्माण पर भी जोर दिया जायेगा। साथ ही भरोसा जताया कि यहाँ पढ़कर निकले विद्यार्थी नालंदा व तक्षशिला विश्वविद्यालय की तरह विश्वभर में भारतीय ज्ञान का परचम लहरायेंगे। उन्होंने कहा कि खुशी की बात है सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति भी इसी भावना के साथ बनाई गई है कि ज्ञान, चरित्र व संस्कार के साथ युवा अपने पैरों पर खड़े हों। साथ ही दूसरों को भी रोजगार व नौकरी देने वाले बनें। श्री सोनी ने उपकरण एवं गैजेट्स इत्यादि पर अत्यधिक निर्भरता पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि चेतन व अचेतन के समन्वय से हम आगे बढ़ेंगे तो अच्छा परिवार, अच्छा समाज व अच्छा देश तैयार कर सकेंगे।

तात्या टोपे, क्रांतिसूर्य टंट्या भील और रानी अवंतीबाई लोधी के नाम पर आरंभ किए गए विश्वविद्यालय

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुना में तात्या टोपे विश्वविद्यालय और खरगोन में क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। सागर में केन्द्रीय विश्वविद्यालय पहले से ही था, इसके साथ ही राज्य सरकार द्वारा रानी अवंतीबाई लोधी विश्वविद्यालय आरंभ किया गया। प्रदेश के सभी 55 जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना कर इन्हें नई शिक्षा नीति के अनुरूप बहुसंकाय कॉलेजों के रूप में विकसित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्य भारत शिक्षा समिति को ऋषि गालव की गौरवशाली परम्परा को विश्वविद्यालय के रूप में पुनर्जीवित करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अगले साल गुरूपूर्णिमा तक आरंभ करने का संकल्प पूर्ण हो यही कामना है।

रिकॉर्ड उपार्जन और नवाचार से बदलेगी खेती की तस्वीर : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' में प्रदेश सरकार ने खेती को लाभ का धंधा बनाने के लिए निर्णायक कदम उठाए हैं। रिकॉर्ड उपार्जन, भंडारण क्रांति और डिजिटल नवाचार से खेती की तस्वीर बदल रही है। सरकार का संकल्प है कि किसान अब सिर्फ अन्नदाता नहीं, बल्कि ऊर्जादाता और तकनीकदाता भी बनेगा।

उपार्जन की तिथियां बढ़ीं, किसानों को बड़ी राहत- मुख्यमंत्री डॉ यादव ने बताया कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 के लिए समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के लिए स्लॉट बुकिंग की अंतिम तिथि 9 मई से बढ़ाकर 23 मई 2026 कर दी गई है, इससे वंचित किसान भी पंजीयन कर अपनी उपज बेच सकेंगे। गत शनिवार तक 34.73 मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया जा चुका है।

प्राइस सपोर्ट स्कीम वर्ष-2026 के तहत लगभग 600 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई है। चने और मसूर की उपज के लिए उपार्जन अवधि 30 मार्च से शुरू होकर 28 मई 2026 तक निर्धारित की गई है। चने के लिए 6.49 लाख मीट्रिक टन एवं मसूर के लिए 6.01 लाख मीट्रिक टन उपार्जन का लक्ष्य है। तुअर के लिए 1.31 लाख मीट्रिक टन का प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उपार्जित उपज का भुगतान समय पर किसानों के खातों में सुनिश्चित किया जा रहा है।

भंडारण क्षमता में ऐतिहासिक वृद्धि- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों की उपज सुरक्षित रहे, इसके लिए खाद्यान्न भंडारण योजना के तहत 3.55 लाख मीट्रिक टन नई भंडारण क्षमता निर्मित की जा चुकी है। भंडार योजना सामग्री के अंतर्गत 15 लाख मीट्रिक टन क्षमता के आधुनिक गोदाम बनाए जा रहे हैं, जिसमें से 11 लाख मीट्रिक टन क्षमता के गोदामों का पंजीयन पूरा हो गया है। इससे किसान भावांतर में अपनी फसल बेचकर अधिक लाभ ले सकेंगे।

डिजिटल नवाचार से स्मार्ट हो रही खेती- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ई-विकास प्रणाली और ई-किसान प्रणाली से किसानों को सभी योजनाओं, मंडी भाव, मौसम और तकनीकी सलाह की जानकारी मोबाइल पर मिल रही है।

खराब मौसम के कारण लखनऊ-दिल्ली इंडिगो फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग

● उप्र के दोनों डिप्टी सीएम सवार थे, 10 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट

नईदिल्ली/भोपाल/लखनऊ/जयपुर/देहरादून (एजेंसी)। खराब मौसम की वजह से दिल्ली से लखनऊ जा रही इंडिगो की फ्लाइट 6ई-6476 की भोपाल में इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। इसमें यूपी के दोनों डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक सवार थे। दोनों भोपाल में सुरक्षित उतरे। यूपी में आंधी-बारिश जारी है। कानपुर, सुल्तानपुर और बाराबंकी समेत 64 जिलों में आंधी, बारिश और ओले गिरने का अलर्ट है। पिछले 24 घंटे में जालौन सबसे गर्म शहर रहा। सुल्तानपुर में पेड़ की डाल गिरने से एक की मौत हो गई। राजस्थान के दौसा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर और हनुमानगढ़ में आंधी के साथ बारिश हुई। ओले भी गिरे। रविवार को खराब मौसम के कारण तीन लोगों की मौत हो गई। जयपुर-आगरा नेशनल हाईवे पर पेड़ गिरने से 40 मिनट तक जाम रहा।

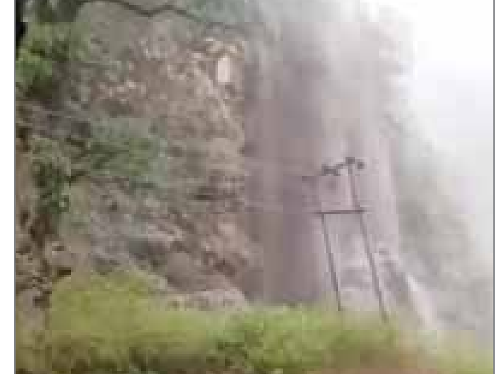

5 मई

- जम्मू-कश्मीर, हिमाचल और उत्तराखंड में बारिश के साथ बिजली गिरने का अनुमान है।
- यूपी, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और ओडिशा में आंधी-बारिश का यलो अलर्ट है।
- असम, मेघालय और अरुणाचल में कुछ जगह भारी बारिश का अनुमान है।

6 मई

- पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल और उत्तराखंड में बारिश होगी।
- यूपी, राजस्थान, बिहार, झारखंड और ओडिशा में आंधी-बारिश का यलो अलर्ट है।
- पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम और मेघालय में बारिश के साथ बिजली गिरने का अनुमान है।

केरल में जली लालटेन

विधानसभा चुनाव में पहली बार आरजेडी प्रत्याशी की जीत

नईदिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में विधानसभा चुनावों के लिए मतदान के बाद मतगणना जारी है। राज्य विधानसभा की सभी 140 सीटों पर मतगणना हो रही है। यहां कांग्रेस के नेतृत्व वाला संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) जीत की ओर बढ़ रहा है। इस बीच, कन्नूर जिले की कूतुपरम्बा सीट पर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पीके प्रवीण ने जीत दर्ज की है। केरल में राजद वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) का हिस्सा है।

मप्र के कई जिलों में किसान नेता हाउस अरेस्ट

सीएम हाउस घेरने से पहले पुलिस का पहरा; 15 सूत्रीय मांगों को लेकर करने वाले थे कूच

भोपाल (नप्र)। किसान मजदूर महासंघ युवा इकाई की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष त्रिलोक सिंह गोठी को देवास में उनके घर पर ही पुलिस अफसर हाउस अरेस्ट किए हैं।

मध्य प्रदेश में अपनी समस्याओं को लेकर भोपाल की ओर कूच करने की तैयारी कर रहे किसान नेताओं को लेकर प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया है। फंदा टोल नाके पर एकत्रित होकर राजधानी पहुंचने की रणनीति बना रहे 'राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ' के आंदोलन को पुलिस ने शुरू होने से पहले ही रोकने का प्रयास किया।

खबर है कि देवास और रतलाम सहित विभिन्न जिलों के प्रमुख किसान नेताओं को उनके घरों से निकलने से पहले ही हाउस अरेस्ट (नजरबंद) कर लिया गया है। वहीं जो किसान घरों से निकल चुके हैं, उन्हें रास्ते में रोका जा रहा है। महासंघ ने मुख्यमंत्री के नाम एक 15 सूत्रीय ज्ञापन तैयार किया है, जिसमें प्रदेश के किसानों की ज्वलंत समस्याओं के त्वरित निराकरण की मांग की गई है।

पुलिस घर से नहीं निकलने दे रही

किसान मजदूर महासंघ की युवा इकाई के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष त्रिलोक सिंह गोठी ने मीडिया को बताया कि करीब 30 जिलों से हमारे संगठन के किसान नेता और कृषक भाई मुख्यमंत्री निवास जाने वाले थे, लेकिन सुबह से ही मुझे घर से बाहर पुलिस के अधिकारी जाने नहीं दे रहे। भोपाल, देवास, सीहोर, सिवनी, हरदा, बालाघाट, रतलाम, नीमच, मंदसौर, उज्जैन, आगर मालवा, शाजापुर सहित तमाम जिलों में हमारे प्रतिनिधियों को पुलिस अधिकारी निकलने नहीं दे रहे हैं।

ये हैं किसान मजदूर महासंघ की 15 मांगें..

गेहूं खरीदी में सुधार– गेहूं की सरकारी खरीदी (उपार्जन) में जो भी रुकावटें आ रही हैं, उन्हें तुरंत दूर किया जाए।

भावांतर राशि का भुगतान– जिन किसानों ने खरीदी में देरी की वजह से मंडियों में गेहूं बेच दिया है, उन्हें चिन्हित कर भावांतर योजना का पैसा दिया जाए।

पराली जलाने के केस– नलवाई (पराली) जलाने पर किसानों के खिलाफ दर्ज मुकदमे वापस लिए जाएं और इस संबंध में सैटेलाइट रिपोर्ट को गलत माना जाए।

डिफाल्टर किसानों को राहत– सहकारी संस्थाओं में कर्ज चुकाने की आखिरी तारीख (डिफाल्टर डेट) गेहूं की खरीदी के बाद की तय की जाए और डिफाल्टर किसानों को दोबारा लोन की सुविधा दी जाए।

नुकसान का मुआवजा– आग लगने या प्राकृतिक आपदा से हुए नुकसान को 100 प्रतिशत मानते हुए किसानों को तुरंत राहत राशि और फसल बीमा का लाभ मिले।

आदिवासियों पर अत्याचार रुके– केन-बेतवा प्रोजेक्ट की वजह से आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार बंद हों और उनकी सभी मांगें पूरी की जाएं।

लागत के आधार पर दाम– खेती की सभी चीजों के दाम सी-250 (लागत फार्मूले) के आधार पर तय हों और मंडियों में इससे कम दाम पर फसल न बिके। साथ ही खलघाट आंदोलन के दौरान प्रशासन द्वारा किए गए वादों को पूरा किया जाए।

पूर्ण कर्ज माफी– सरकारी नीतियों के कारण किसानों को फसल का सही दाम नहीं मिला, इसलिए प्रदेश के सभी किसानों का पूरा कर्ज माफ किया जाए।

दूध के दाम– दूध का रेट 12 रुपए प्रति किलो फैट किया जाए और सरकार की ओर से घोषित 5 रुपए प्रति लीटर की बोनस राशि जल्द दी जाए।

जमीन रिकॉर्ड में सुधार– सरकारी रिकॉर्ड (बंदोबस्त) में जो गलतियां हैं उन्हें सुधारा जाए, क्योंकि अधिकारी किसानों के आवेदनों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

जमीन अधिग्रहण का मुआवजा– किसानों के खेतों से हाईटेंशन बिजली लाइन, रेलवे लाइन या पाइपलाइन न निकाली जाए। यदि बहुत जरूरी हो, तो बाजार रेट से 10 गुना ज्यादा मुआवजा दिया जाए।

बिजली विभाग पर लगाम– बिजली विभाग की मनमानी और किसानों को परेशान करने की हरकतों पर तुरंत रोक लगाई जाए।

मूंग की खरीदी– गर्मी के सीजन में उगाई गई मूंग की पूरी फसल को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदा जाए।

खाद की मात्रा बढ़ाना– 'फार्मर आईडी' और 'ई-टोकन' व्यवस्था के तहत खाद बांटते समय, उसकी मात्रा फसल की जरूरत के हिसाब से बढ़ाई जाए।

जिला स्तर पर लैब– हर जिले में खाद, कीटनाशक और मिट्टी की जांच के लिए सरकारी लैब (प्रयोगशाला) जरूर बनाई जाए।

1 मई से शुरू होनी थी मकानों की गणना

4 दिन बाद भी कई जोन में काम धीमा, प्रगणक बोले– जनगणना का एप काम नहीं कर रहा

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में 1 मई से शुरू होने वाली जनगणना के तहत मकान गणना की प्रक्रिया में देरी हो रही है। 4 मई तक भी कई जोन में प्रगणकों को आईडी कार्ड नहीं मिले हैं। कई प्रगणकों ने शिकायत की है कि जनगणना के लिए दिया गया एप सही तरीके से काम नहीं कर रहा।

वहीं सुपरवाइजरों का कहना है कि उनके अधीन काम करने वाले प्रगणक ड्यूटी पर नहीं पहुंच रहे हैं और फोन भी नहीं उठा रहे हैं। इससे फील्ड वर्क प्रभावित हो रहा है। जोनल कार्यालयों में लोगों की भीड़ लगी हुई है। प्रगणक आईडी कार्ड और अन्य जरूरी संसाधनों के लिए लगातार चक्कर लगा रहे हैं। जनगणना के दौरान तैयार किया जाने वाला नजरी नक्शा (मैप) मैनुअल बनाना पड़ रहा है, जिसमें भी दिक्कतें सामने आ रही हैं। तकनीकी समस्याओं के चलते काम बहुत धीरे हो रहा है।

जनगणना का एप ही काम नहीं कर रहा

प्रगणक जितेंद्र चौहान ने बताया कि जनगणना के लिए जो एप दिया गया है वह सही से काम नहीं कर रहा है। अभी कई लोगों के यूजर आईडी और पासवर्ड भी नहीं बन पाए हैं। प्रगणकों को मैप तो मिल गया। लेकिन उसमें प्रगणक की बाउंड्री क्या है यह अभी तक तय नहीं हो पाया है। उन्होंने कहा कि जोन कार्यालय से कोई हमारी मदद करे तो ये काम जल्दी शुरू हो पाएगा।

कई जोन में फील्ड पर गणना शुरू

वहीं राजधानी के कई जोन कार्यालयों में काम पुरा हो चुका है। प्रगणकों ने फील्ड पर गणना का काम शुरू कर दिया है। कमिश्नर ऑफिस के पास स्थित जोन कार्यालय-7 के जोनल ऑफिसर अंकित जयसवाल ने बताया कि हमारे यहां 91 प्रगणक हैं और 16 सुपरवाइजर हैं।

जबलपुर एयरपोर्ट पर कहा- बदबू आ रही; अधिकारियों ने मनाया-स्प्रे छिड़का, तब भरी उड़ान

पिता-बेटे के शव ले जाने से फ्लाइट ऑपरेटर का इनकार

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के बरगी क्रूज हादसे में सिस्टम की लापरवाही से 13 जानें चली गईं। प्राथमिक जांच में खराब मौसम के अलर्ट की अनदेखी को इसकी मुख्य वजह माना जा रहा है। हद तो ये है कि मृतकों के शव की भी दुर्दशा की जा रही है।

कामरान, पिता — श्रीतमिल, बेटा

हादसे में जान गंवाने वाले आर्डनेंस फैक्ट्री के कर्मचारी कामराज आर और उनके 5 साल के बेटे श्रीतमिल का शव ले जाने से फ्लाइट ऑपरेटर ने मना कर दिया। तर्क दिया कि बॉडी डी-कंपोज हो रही हैं। बदबू आ रही है। ऐसे में वह इन्हें नहीं ले जा सकता है। इसका पता लगते ही प्रशासनिक अधिकारी सक्रिय हुए और ऑपरेटर को समझाकर शव फ्लाइट में रखवाए। इसकी वजह से फ्लाइट ने अपने निर्धारित समय से एक घंटे देरी से उड़ान भरी

मौसम खराब होने के कारण रविवार को नहीं भरी थी उड़ान– जबलपुर के बरगी डैम में 30 अप्रैल को मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग का क्रूज डूबा था। इसमें सवार 13 टूरिस्ट की मौत हो गई। उसी दिन 30 अप्रैल को 4 शव, एक मई को 5, दो मई को 2 और तीन मई को दो शव तैरते मिले। मृतकों में 4 बच्चे और 8 महिलाएं शामिल हैं। 28 लोगों को बचा लिया गया था।

श्रीतमिल का शव दो मई को मिला था जबकि कामराज की लाश 3 मई की सुबह मिली। रविवार शाम को ही कामराज और श्रीतमिल का शव लेकर खमरिया अस्पताल से एम्बुलेंस डुमना एयरपोर्ट के लिए रवाना हुई। रांझी पहुंचने पर जानकारी मिली कि त्रिची का मौसम खराब है, विमान लैंड नहीं कर पाएगा। इस पर एम्बुलेंस वापस अस्पताल आ गई और दोनों शव मरचुरी में रखवा दिए गए।

ऑपरेटर ने कहा– बदबू आ रही है, बॉडी नहीं ले जा सकता– आर्डनेंस फैक्ट्री में कामराज के सहकर्मी सुरेश कन्ना ने मीडिया को बताया- सोमवार सुबह 6 बजे तय समय पर एम्बुलेंस से शव लेकर डुमना एयरपोर्ट पहुंच गए थे। साढ़े 7 बजे जेट सर्व एविएशियन कंपनी का चार्टेड प्लेन आया। इसे मध्य प्रदेश सरकार ने हायर किया था।

जैसे ही बॉडी उसमें रखी गई, फ्लाइट ऑपरेटर ने कहा कि शवों से बदबू आ रही है, ऐसे में उनको नहीं ले जाया जा सकता।

मामले की जानकारी कलेक्टर राघवेंद्र सिंह को लगी तो उन्होंने रांझी एसडीएम मोनिका वाघमारे और तहसीलदार आदर्श जैन को एयरपोर्ट भेजा। उन्होंने स्प्रे की व्यवस्था की। दोनों शवों की दोबारा कॉफिन में टेपिंग की गई। इसके बाद करीब 9 बजे फ्लाइट त्रिची के लिए रवाना हो सकी।

परिवार के 3 सदस्यों की मौत, केवल बड़ा बेटा ही बचा– कामराज मूलतः तमिलनाडु में त्रिची के रहने वाले थे। 2010 में आर्डनेंस फैक्ट्री में उनकी जॉब लगी। परिवार में पत्नी के अलावा दो बच्चे थे। क्रूज हादसे में कामराज का सिर्फ बड़ा बेटी पूवीथरन ही बचा है।

मप्र में 6 साल बाद महिला आयोग में नियुक्ति

रेखा यादव बनीं अध्यक्ष; समीक्षा की नियुक्ति अटकी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियों का सिलसिला जारी है। राज्य सरकार ने तीन अहम नियुक्तियां करते हुए रेखा यादव को राज्य महिला आयोग का अध्यक्ष और साधना स्थापक को सदस्य बनाया है। महिला आयोग को छह साल बाद अध्यक्ष मिली हैं।वहीं, रवि मालवीय को पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वित्त विकास निगम का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

महिला आयोग में कोरम अधूरा– अध्यक्ष और एक सदस्य की नियुक्ति के बाद भी महिला आयोग की बेंच का कोरम अधूरा ही है। महिला आयोग में कुल 6 पद हैं, जिनमें से 1 एक अध्यक्ष और 5 सदस्यों के पद हैं। इस लिहाज से आयोग में अभी सदस्यों के 4 पद खाली हैं।

समीक्षा का नाम होल्ड पर– ग्वालियर की पूर्व महापौर साधना गुप्ता को सदस्य बनाया जा रहा था लेकिन, ग्वालियर से नियुक्तियों की संख्या ज्यादा होने और मंत्री नारायण कुशवाह के अंदरूनी तौर पर विरोध के चलते फिलहाल उनका नाम होल्ड कर दिया गया है। अब महिला आयोग में जल्द ही एक और सदस्य की नियुक्ति होने की संभावना हैं।

आयोगों में हो चुकीं इनकी नियुक्तियां

रामलाल रौतेलः अध्यक्ष, अनुसूचित जनजाति आयोग
कैलाश जाटवः अध्यक्ष, अनुसूचित जाति आयोग
रेखा यादवः अध्यक्ष, राज्य महिला आयोग
राघवेंद्र शर्माः अध्यक्ष, योग आयोग
प्रवीण शर्माः अध्यक्ष, युवा आयोग।

निगमों में नियुक्तियां

रामनिवास रावतः अध्यक्ष, राज्य वन विकास निगम
केशव सिंह बघेलः अध्यक्ष, पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम
के.पी. यादवः अध्यक्ष, स्टेट सिविल सप्लाइज कॉर्पोरेशन
रवि मालवीयः अध्यक्ष, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वित्त विकास निगम
सौभाग्य सिंहः अध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक निगम
सत्येंद्र भूषण सिंहः अध्यक्ष, लघु उद्योग निगम

बोर्ड में नियुक्तियां

महेश केवटः अध्यक्ष, मछुआ कल्याण बोर्ड
केशव भदौरियाः अध्यक्ष, महाराणा प्रताप कल्याण बोर्ड
पंकज जोशीः अध्यक्ष, मप्र खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड

बच्चियों को बचाते हुए आरक्षक की डूबने से मौत

मंडला के देवगांव संगम में हुआ हादसा; मोहगांव थाने में था पदस्थ

मंडला (नप्र)। मंडला जिले के मोहगांव थाना क्षेत्र में सोमवार को एक पुलिस आरक्षक शिवलाल परस्ते की डूबने से मौत हो गई। यह हादसा देवगांव स्थित नर्मदा और बुडनेर नदी के संगम पर हुआ, जहां आरक्षक अपने परिवार के साथ स्नान करने गए थे। अपनी बच्चियों को बचाने के प्रयास में वे गहरे पानी में डूब गए, हालांकि उनकी बच्चियों को सुरक्षित बचा लिया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, आरक्षक शिवलाल परस्ते पिछले लगभग 11 महीनों से मोहगांव थाने में पदस्थ थे। उनकी पत्नी बिछिया क्षेत्र में शिक्षिका हैं और बच्चे भी अपनी मां के साथ वहीं रहते थे। छुट्टियों के कारण पत्नी और बच्चे मोहगांव आए हुए थे। सोमवार को परिवार देवगांव संगम पर घूमने और स्नान करने गया था।

ऐसे हुई घटना– बताया गया कि स्नान करते समय उनका बेटा अचानक गहरे पानी में चला गया। उसे बचाने के लिए उनकी दो बेटियां भी पानी में उतरीं, लेकिन वे भी डूबने लगीं। यह देख आरक्षक शिवलाल तुरंत पानी में कूद पड़े। उन्होंने और वहां मौजूद अन्य लोगों ने बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन इसी दौरान शिवलाल खुद गहरे पानी में डूब गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे। काफी प्रयासों के बाद आरक्षक का शव बाहर निकाला गया और पोस्टमार्ट्म के लिए भेज दिया गया।

एक बच्ची की हालत खराब– एडिशनल एसपी शिवकुमार वर्मा ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि आरक्षक शिवलाल परस्ते बच्चों की जान बचाते हुए गहरे पानी में डूब गए। उन्होंने यह भी बताया कि एक बच्ची की हालत थोड़ी खराब थी, लेकिन अब वह भी सुरक्षित है। मौके पर डीएसपी को भेजा गया है और तत्काल राहत के रूप में 50 हजार रुपए की सहायता राशि प्रदान की जा रही है।

मेंटेनेंस के चलते भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस निरस्त

मई में अलग-अलग तारीखों पर नहीं चलेगी दोनों दिशाओं की ट्रेन

भोपाल (नप्र)। पश्चिम मध्य रेलवे के भोपाल मंडल से संचालित भोपाल-जोधपुर-भोपाल एक्सप्रेस के यात्रियों के लिए जरूरी खबर है। उत्तर पश्चिम रेलवे के जयपुर मंडल अंतर्गत कनकपुरा स्टेशन पर यार्ड में नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य के चलते मई में इस ट्रेन के फेरे निरस्त किए गए हैं।

रेलवे प्रशासन के अनुसार यह कार्य भविष्य में ट्रेनों की सुरक्षित और सुगम आवाजाही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

निरस्त ट्रेनों का शेड्यूल इस प्रकार है– गाड़ी संख्या 14814 भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस भोपाल से 04, 05, 08, 12, 13 एवं 14 मई 2026 को कुल 7 ट्रिप निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 14813 जोधपुर-भोपाल एक्सप्रेस जोधपुर से 04, 07, 11, 12 एवं 13 मई 2026 को कुल 7 ट्रिप निरस्त रहेगी।

सफाई कर्मचारी ने प्रिंसिपल पर लगाया शोषण का आरोप

बोली– शारीरिक संबंध बनाने को कहा, नौकरी से निकालने की धमकी दी, एसपी से शिकायत

कटनी (नप्र)। कटनी जिले के रीठी स्थित शासकीय संदीपनी स्कूल के प्राचार्य हेमराज कारपेंटर पर एक महिला सफाई कर्मचारी ने छेड़छाड़ के आरोप लगाए हैं। आउटसोर्स कर्मचारी के रूप में कार्यरत महिला ने एसपी कार्यालय पहुंचकर प्राचार्य पर शारीरिक संबंध बनाने का दबाव डालने की लिखित शिकायत की है।

पीड़िता का आरोप है कि मांग न मानने पर प्राचार्य उसे नौकरी से निकालने की धमकी दे रहे हैं। अब पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

थाने में सुनवाई नहीं हुई, एसपी के पास पहुंची पीड़िता

पीड़िता ने बताया कि उसने सबसे पहले रीठी थाने में शिकायत दर्ज कराने का प्रयास किया था, लेकिन वहां कोई सुनवाई नहीं हुई। स्थानीय पुलिस की निष्क्रियता को देखते हुए वह जिले के वरिष्ठ अधिकारियों के पास पहुंची। महिला ने अपनी जीविका छिनने का डर जताते हुए मामले की निष्पक्ष जांच और आरोपी के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

भोपाल में किसानों का एसडीएम ऑफिस के बाहर डेरा

गेहूं की स्लॉट बुकिंग, सीमांकन जैसे मामलों पर नाराजगी; जमीन अधिग्रहण का भी विरोध

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कई किसानों ने एमपी नगर एसडीएम ऑफिस के बाहर डेरा डाल लिया है। समर्थन मूल्य पर गेहूं की स्लॉट बुकिंग, सीमांकन, नामांकन जैसे मामलों को लेकर उनकी नाराजगी है। वहीं, सड़क निर्माण में जमीन अधिग्रहण का विरोध भी वे कर रहे हैं।

एमपी नगर और हुजूर तहसील के किसानों ने डेरा डाला है। किसान कुबैर सिंह राजपूत ने बताया कि एमपी नगर व हुजूर तहसील के किसानों को तहसील से जुड़ी कई समस्याएं आ रही हैं। इनमें गेहूं बेचने के लिए स्लॉट बुकिंग, किसान सम्मान निधि, फार्मर आईडी नहीं बनाना, सीमांकन, नामांतरण, बंटान, बिजली, फसल बीमा, भूमि अधिग्रहण आदि शामिल हैं।

राजस्व प्रकरणों में कई प्रकार की समस्याएं आ रही हैं। इसको लेकर भारतीय किसान संघ ने तहसील हुजूर ने कई बार आवेदन दिए। बावजूद समस्या का निराकरण नहीं हुआ। इसलिए एमपी नगर एसडीएम ऑफिस के बाहर अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है।

पटवारी सोमवार और गुरुवार को गांव में बैठे– किसानों की मांग है कि पटवारियों को हर सोमवार और गुरुवार को संबंधित हल्के के गांवों में बैठना चाहिए। ताकि, किसानों को परेशानी न हो और उन्हें तहसील या जिला मुख्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़े।

ऐसे समझे किसानों की परेशानी

- **गेहूं खरीदी में देरी और अव्यवस्था–** सबसे बड़ी समस्या सरकारी गेहूं उपार्जन केंद्रों पर खरीदी में देरी और पोर्टल की खराबी है। स्लॉट बुकिंग न होना के कारण अव्यवस्था से किसानों का गेहूं खेतों में या घरों में पड़ा है। जिससे खराब मौसम में नुकसान का डर है।
- **भूमि अधिग्रहण का उचित मुआवजा–** पिपलानी बी-सेक्टर से खजूरीकलां बायपास तक 4 लेन रोड निर्माण कार्य प्रोजेक्ट लंबाई- 4.2 किमी के अंतर्गत आने वाले किसानों को भूमि अधिग्रहण का मुआवजा सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार देने की मांग है। वे रजिस्ट्री के छांट बिक्र+ी पत्र, अधिकतम बाजार मूल्य की रजिस्ट्री, जमीन के भविष्य के उपयोग, क्षेत्र में हो रहे विकास एवं आगामी वर्षो में उक्त भूमि की संभावित कीमत के आधार पर बाजार मूल्य से 4 गुना कीमत के आधार पर शीघ्र मुआवजा देने की बात कर रहे हैं।
- **ओलावृष्टि और बेमौसम बारिश–** कटाई के समय होने वाली बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से तैयार फसलें बर्बाद हो रही हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए शीघ्र सर्वे कराकर पारदर्शिता सुनिश्चित कर लाभ दिया जाए।
- **समय सीमा तय किया जाना सुनिश्चित–** तहसील एमपी नगर के किसानों के नामांतरण, बंटाकन, सीमांकन जैसे राजस्व प्रकरणों का निराकरण समय सीमा में नहीं हो रहा है। यहां पर बाबूवाद भी हावी है। कई बार दलालों के माध्यम से ही काम किया जाता है।
- **बिजली के तार व पोल में सुधार–** बिजली कंपनी की लापरवाही के चलते लाइन के तार और पोल को लेकर भी दिक्कतें हैं। कई जगहों से लाइन डेमेज हो गई है। बारिश से पहले इनका संधारण किया जाए।

संपादकीय

केसपुब: दखल या सुरक्षा?

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में बहुत बड़े पैमाने पर केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (केसपुब) की तैनाती भारत के चुनाव इतिहास में सुरक्षा व्यवस्था का एक नया प्रतिमान बनने जा रहा है। बेशक, इसके पीछे केन्द्र सरकार की मंशा राज्य में निर्भयता के साथ चुनाव कराना हो, लेकिन इसके औचित्य पर राजनीतिक और नैतिक बहस जारी रहेगी। यह सवाल हमेशा उठेगा कि किसी राज्य के विधानसभा चुनाव में केन्द्रीय सुरक्षा बलों की इतनी व्यापक तैनाती चुनाव में केन्द्र का प्रत्यक्ष दखल है अथवा निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए जरूरी प्रशासनिक हस्तक्षेप। क्योंकि अमूमन इतने बड़े पैमाने पर केन्द्रीय सशस्त्र सुरक्षा बल नक्सल अथवा अलगाववादी हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों में ही तैनात किए जाते रहे हैं। आमतौर पर राज्य में चुनाव कराने की जिम्मेदारी राज्य पुलिस पर ही होती है। लेकिन इस बार पश्चिम बंगाल में चुनाव के दौरान और पश्चात भी सुरक्षा के मद्देनजर केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल के 2.4 लाख से ज्यादा जवान तैनात किए गए, जो 2021 के विधानसभा चुनाव में प्रयुक्त संख्या से लगभग तीन गुना ज्यादा है। इस चुनाव में बीएसएफ, सीआईएसएफ, सीआरपीएफ, आईटीबीपी, एनएसजी और एसएसबी आदि सशस्त्र बलों ने सीधी निगरानी के लिए अपना कंट्रोल रूम भी बनाया, जबकि क्विक रिस्पॉन्स टीम्स को बड़े पैमाने पर तैनात किया गया। पिछले डेढ़ महीने में जवानों को मतदान केंद्रों के 100 मीटर के दायरे में सुरक्षा देने की जिम्मेदारी दी गई। बेहतर समन्वय दिखाते हुए, सभी सीएपीएफ यूनिट्स के प्रमुख 18 अप्रैल को कोलकाता के साइंस सिटी में कानून-व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के लिए मिले। यहां तक कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की टीमें, जिसका काम कानून-व्यवस्था संभालना नहीं है, भी संवेदनशील इलाकों में तैनात की गईं। एक और अभूतपूर्व बात यह हुई कि केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कोलकाता की एक रैली में घोषणा की कि मतदान खत्म होने के बाद भी लगभग सत्तर हजार केसपुब जवान पश्चिम बंगाल में 'अगले आदेश तक' तैनात रहेंगे। जबकि आमतौर मतदान खत्म होते ही केसपुब की बटालियनें अपनी मूल तैनाती पर लौटने लगती हैं। और बाद में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए संवेदनशील इलाकों में आमतौर पर सिर्फ 30 से 40 बटालियन ही रखी जाती हैं। समूचे देश में पश्चिम बंगाल अकेला ऐसा राज्य है, जहां चुनाव के दौरान और नतीजे घोषित होने के बाद भी भारी हिंसा होती रही है और इसमें कई लोग मारे जाते रहे हैं। यहां सवाल लोकतांत्रिक नैतिकता और शांति तथा निर्भय वातावरण में चुनाव सम्पन्न कराने का है। प. बंगाल में यह शिकायत बड़े पैमाने पर आई है कि वहां विरोधी पार्टी के मतदाता को डरा धमका कर या तो घर से ही नहीं निकलने दिया जाता या फिर कोई दूसरा ही उसका वोट देकर चला जाता है। अर्थात् फर्जी वोटिंग भी खूब होती है। ऐसे में केन्द्र सरकार के पास केन्द्रीय सुरक्षा बलों की बड़े पैमाने पर तैनाती के अलावा कोई और उपाय नहीं बचता। केन्द्र सरकार के इस कदम से विचलित और चिंतित तृणमूल कांग्रेस का आरोप है कि यह चुनाव में 'केंद्र का दखल' है और 'डराने की कोशिश' है। दूसरी तरफ केंद्र का कहना है कि यह स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए ज़रूरी कदम है। 2021 के विस चुनाव के दौरान राज्य में चुनाव से जुड़ी 50 से ज्यादा मौतें और हिंसा की 300 से ज्यादा घटनाएं हुई थीं। इस बार सिर्फ एक मौत की खबर आई और वह भी राजनीतिक हिंसा से जुड़ी नहीं थी। आरोप- प्रत्यारोप अपनी जगह हैं, लेकिन यह हकीकत है कि बड़े पैमाने पर केससुब की तैनाती से मतदाताओं में भरोसा बना तथा 92 फीसदी से ज्यादा लोगों ने मताधिकार का प्रयोग कर सर्वाधिक मतदान का नया रिकॉर्ड बना डाला।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

सियासत का चक्रव्यूह: जहाँ रणनीति ही चुनौती बन गई

साल 1997 में ममता बनर्जी ने कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल कांग्रेस की स्थापना की। उस समय बंगाल में सीपीआई (एम) और वामपंथी दलों का गहरा प्रभाव था। इस प्रभाव को तोड़ने के लिए ममता को एक मजबूत सहयोगी की जरूरत थी, और यह सहयोग उन्हें भाजपा के रूप में मिला। 1999 में वह राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार में शामिल हुईं और रेल मंत्री बनीं। यह वह दौर था जब भाजपा और टीएमसी के बीच संबंध केवल रणनीतिक नहीं बल्कि वैचारिक सहमति के स्तर तक पहुंचते दिख रहे थे। यहां तक कि ममता ने एक समय भाजपा को 'स्वाभाविक सहयोगी' तक कहा। हालांकि 2001 के ऑपरेशन वेस्ट एंड के बाद ममता ने एनडीए से दूरी बना ली, लेकिन 2003 में वह फिर उसी गठबंधन में लौट आईं। इस दौरान उनके संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा नेताओं से भी मधुर रहे। मोहन भागवत जैसे नेताओं के प्रति उन्होंने सकारात्मक बयान दिए। यह वह समय था जब राजनीति में विरोध और समर्थन की सीमाएं इतनी स्पष्ट नहीं थीं। ममता बनर्जी एक तरफ वामपंथ के खिलाफ लड़ाई लड़ रही थीं, तो दूसरी तरफ भाजपा के साथ रणनीतिक गठजोड़ बनाए रख रही थीं।

भारतीय राजनीति केवल विचारधाराओं का संघर्ष नहीं है, बल्कि यह समय, परिस्थितियों और निर्णयों का एक जटिल ताना-बाना है, जिसमें जो बोया जाता है, वही अंततः फल बनकर सामने आता है। पश्चिम बंगाल की राजनीति में ममता बनर्जी का सफर इसी सत्य का जीवंत उदाहरण बन चुका है। कभी वामपंथ के गढ़ को ध्वस्त करने के लिए उन्होंने जिस शक्ति को बंगाल की धरती पर प्रवेश कराया, वही शक्ति आज उनके सबसे बड़े राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़ी दिखाई देती है- भारतीय जनता पार्टी।

साल 1997 में ममता बनर्जी ने कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल कांग्रेस की स्थापना की। उस समय बंगाल में सीपीआई (एम) और वामपंथी दलों का गहरा प्रभाव था। इस प्रभाव को तोड़ने के लिए ममता को एक मजबूत सहयोगी की जरूरत थी, और यह सहयोग उन्हें भाजपा के रूप में मिला। 1999 में वह राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार में शामिल हुईं और रेल मंत्री बनीं। यह वह दौर था जब भाजपा और टीएमसी के बीच संबंध केवल रणनीतिक नहीं बल्कि वैचारिक सहमति के स्तर तक पहुंचते दिख रहे थे। यहां तक कि ममता ने एक समय भाजपा को 'स्वाभाविक सहयोगी' तक कहा।

हालांकि 2001 के ऑपरेशन वेस्ट एंड के बाद ममता ने एनडीए से दूरी बना ली, लेकिन 2003 में वह फिर उसी गठबंधन में लौट आईं। इस दौरान उनके संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा नेताओं से भी मधुर रहे। मोहन भागवत जैसे नेताओं के प्रति उन्होंने सकारात्मक बयान दिए। यह वह समय था जब राजनीति में विरोध और समर्थन की सीमाएं इतनी स्पष्ट नहीं थीं। ममता बनर्जी एक तरफ वामपंथ के खिलाफ लड़ाई लड़ रही थीं, तो दूसरी तरफ भाजपा के साथ रणनीतिक गठजोड़ बनाए रख रही थीं।

2011 में ममता बनर्जी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कर 34 वर्षों से सत्ता में काबिज वामपंथी सरकार को उखाड़ फेंका। लेकिन यही वह समय था जब भाजपा धीरे-धीरे बंगाल में अपनी जड़ें मजबूत कर रही थी। 2014 के बाद नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार किया और बंगाल भी इस रणनीति का केंद्र बना। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने बंगाल में अप्रत्याशित सफलता हासिल की, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि अब राज्य

में सीधी लड़ाई टीएमसी और भाजपा के बीच है।

ममता बनर्जी की संभावित हार के कई कारण उभर कर सामने आते हैं। पहला कारण है शासन के खिलाफ बढ़ती नाराजगी। लंबे समय तक सत्ता में रहने के कारण एंटी-इनकंबेंसी स्वाभाविक है। भ्रष्टाचार के आरोप, जैसे शिक्षक भर्ती घोटाला, ने उनकी छवि को नुकसान पहुंचाया। दूसरा कारण है संगठनात्मक कमजोरी। टीएमसी में कई बड़े नेताओं का आना-जाना, जैसे मुकुल रॉय का भाजपा में जाना और फिर लौटना, पार्टी की स्थिरता पर सवाल उठाता है। तीसरा महत्वपूर्ण कारण है भाजपा का आक्रामक विस्तार। भाजपा ने हिंदुत्व, राष्ट्रवाद और विकास के मुद्दों को बंगाल में प्रभावी ढंग से पेश किया, जिससे एक नया वोट बैंक तैयार हुआ। चौथा कारण है विपक्षी गठबंधनों की कमजोरी। इंडिया गठबंधन के भीतर समन्वय की कमी और टीएमसी का अलग रुख भी ममता के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है।

2019 के बाद नागरिकता संशोधन अधिनियम और एनआरसी जैसे मुद्दों पर ममता बनर्जी ने तीखा विरोध किया। लेकिन संसद में उनकी पार्टी के कुछ सांसदों की अनुपस्थिति ने राजनीतिक सवाल खड़े किए। इससे उनकी रणनीति पर संदेह उत्पन्न हुआ और विपक्षी एकता कमजोर पड़ी। ममता बनर्जी की राजनीति में एक बड़ा विरोधाभास यह रहा है कि उन्होंने कभी आरएसएस और भाजपा की प्रशंसा की, तो कभी उनके खिलाफ सबसे तीखा संघर्ष किया। यह द्वंद्व उनकी छवि को अस्थिर बनाता है। राजनीति में स्थिरता और स्पष्टता बहुत महत्वपूर्ण होती है। जब नेता बार-बार अपने रुख बदलते हैं, तो जनता के बीच विश्वास कमजोर पड़ता है। यही स्थिति आज टीएमसी के सामने दिख रही है।

यह कहना जल्दबाजी होगी कि तृणमूल कांग्रेस का भविष्य समाप्त हो जाएगा। बंगाल की राजनीति में ममता बनर्जी अभी भी एक मजबूत नेता हैं और उनके पास जमीनी समर्थन है। हालांकि, यदि पार्टी अपने संगठन को मजबूत नहीं करती, भ्रष्टाचार के आरोपों से खुद को मुक्त नहीं करती और स्पष्ट राजनीतिक रणनीति नहीं बनाती, तो भविष्य में उसकी स्थिति कमजोर हो सकती है। दूसरी ओर, भाजपा का उभार लगातार जारी है, लेकिन बंगाल की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना उसे पूरी तरह स्वीकार करेगी या नहीं, यह भी एक बड़ा प्रश्न है।

बंगाल की राजनीति आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहां अतीत के निर्णय वर्तमान को प्रभावित कर रहे हैं। ममता बनर्जी ने जिस राजनीतिक रणनीति के तहत भाजपा को बंगाल में प्रवेश दिया, वही आज उनके लिए चुनौती बन गई है। अब भविष्य में टीएमसी और ममता बनर्जी का राजनीतिक अस्तित्व इस बात पर निर्भर करेगा कि वे अपनी गलतियों से कितना सीखती हैं और बदलते समय के साथ खुद को कितना ढाल पाती हैं।

राजनीति

डॉ.संजीव कुमार

सामाजिक एवं राजनीतिक विश्लेषक

सत्ता परिवर्तन जरूरी, मगर एक विचार यह भी

महान दार्शनिक, राजनीतिक एवं समाज विशेषज्ञ अरस्तु ने कभी कहा था कि लोकतंत्र अज्ञानियों (मूर्खों) द्वारा किया गया शासन है. वे लोकतंत्र को भीड़ का शासन कहते थे, और भीड़ का कोई विवेक नहीं होता. मध्य भारत में इस वक्त लू की लपेट चल रही है, इधर पांच राज्यों के चुनाव ने इसे और गर्म कर दिया था. अब पांच राज्यों के चुनाव का परिणाम भी आ चुका है. देश के सभी राजनीतिज्ञों, मीडिया, और आमजनों का ध्यान मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के परिणाम पर था. पश्चिम बंगाल जहां पिछले 15 साल से कद्दावर नेता ममता बनर्जी शासन में थी. इसलिए बीजेपी यहां जीतने के लिए एक दशक से लालायित थी. होती भी क्यों नहीं अब तक उसने जिन राज्यों में जैसा चाहा वैसा परिणाम हासिल किया है. अगर इस बार का चुनाव बीजेपी वहां हार जाती तो 29 के बाद शायद ही कभी उसे पश्चिम बंगाल में जीत का मुंह देखना पड़ता है. एक प्रकार से कहें तो यह जीत उसके नाक पर बन आयी थी. क्योंकि अगर वह अपने युग पुरुष के रहते ऐसा नहीं कर पाती तो उसकी रणनीति उसे कभी चैन से सोने नहीं देती.

ममता बनर्जी को हटाने के लिए भारतीय जनता पार्टी 2021 से ही कमर कस चुकी थी. आज शायद बहुत कम लोगों को यह याद हो कि बीजेपी की जो टीम पश्चिम बंगाल में बनी हुई है वह उसके उसी ईडी, सीबीआई के धरपकड़ परिणामों का ही नतीजा है कि टीएमसी के आधे नेता बीजेपी में शामिल हो चुके थे, फिर भी ममता सबके सामने अकेले डटी रही. ममता को हराने के लिए बीजेपी ने इस बार भी कोई कसर नहीं छोड़ी थी. इडी, सीबीआई तो पहले से ही उसके पास थी इस बार उसने सर की बदौलत तथाकथित घुसपैठियों को बाहर निकाल कर अपनी जीत पक्की कर ली. उसे यह घुसपैठिए ममता बनर्जी की उन्हीं क्षेत्रों में मिले जहां टीएमसी को 70 से 80 प्रतिशत सीटे प्राप्त होती थी. लोकतंत्र में भरोसा करने वाला हर व्यक्ति कभी भी किसी की स्थाई सरकार नहीं चाहेगा क्योंकि यही लोकतंत्र की जान है. ममता बनर्जी 15 साल से पश्चिम बंगाल में थी. आज नहीं तो कल उन्हें भी बेदखल होना ही था परंतु इस तरह होंगी यह हमारे लोकतांत्रिक व्यवस्था पर एक सवाल है.अभी इसी वर्ष हमने बिहार में भी चुनाव देखे हैं. जहां सत्ता पक्ष ने प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं के खाते में पैसे आवंटित कर मतदान के दौरान वोट खरीदने का कार्य किया था चाहती तो ममता भी ऐसा कुछ कर सकती थी लेकिन उन्होंने नैतिकता का दामन नहीं छोड़ा, और आज नैतिकता ने उन्हें खुद छोड़ दिया. शायद अरस्तु इसी दिन के लिए इशारा कर रहे थे, आज उनका कथन सत्य लग रहा है.

मैं बीजेपी और अमित शाह के रणनीति का दाद देना चाहूंगा. हम बीजेपी का कितना भी विरोध कर ले पर उनके चुनावी रणनीति का कोई जवाब नहीं है.2011 में बीजेपी पश्चिम बंगाल में शून्य पर थी. 2016 में उसने अपना खाता खोला, और 2021 में 77 सीटों के साथ विपक्ष में बैठी पर उसकी नजर पश्चिम बंगाल के सत्ता पर बनी रही और उसने अपने सारे अस्त्र इस्तेमाल किये आज परिणाम उसके सामने है. दूसरी तरफ प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस ने भी उनके लिए कुछ रास्ते खोलने का कार्य किया तभी वह यहां तक पहुंच पाई. 2011 और 2016 के चुनाव में ममता बनर्जी ने कांग्रेस के साथ गठबंधन में अपनी सरकार बनाई थी. फिर 2021 में ममता को लगा कि अब हम कांग्रेस के बगैर भी सत्ता में आ सकते हैं और वह जीत भी गई. ममता बनर्जी को पूरा भरोसा था कि वह 2021 के परिणाम की पुनः पुनरावृत्ति करेंगी और कांग्रेस के बगैर अपनी सत्ता बचा पाएंगी . पर उन्होंने इतनी बड़ी भूल कैसे कर दी जहाँ बीजेपी जैसा शातिर विपक्षी हो जिसके पास ईडी सीबीआई, धन, संसाधन, मीडिया सबकुछ है उससे अकेले लड़ना उनके लिए कितना सुरक्षित रहेगा? उनका यही अति उत्साह उन्हें ले डूबा. लेकिन एक तरह से यह अच्छा भी हुआ 2029 की लोकसभा चुनाव के लिए विपक्ष में कोई मजबूत महिला नेता नहीं थी अब ममता बनर्जी को काफी वक्त मिलेगा 2029 की तैयारी के लिए साथ ही देश के उन सभी क्षेत्रीय पार्टियों के लिए भी एक संदेश होगा जो अपने राज्यों में दशकों से बीजेपी से अकेले लड़ रही है उन्हें भी अब समझना होगा कि यूं ही अकेले चलने से उन्हें सिकस्त के अलावा कुछ नहीं मिलने वाला.

तमिलनाडु की राजनीति ने हमेशा चौकाने का कार्य किया है. वहां सत्ता परिवर्तन होते रहता है. अच्छी बात है कि वहां की राजनीति मध्य भारत और पूर्वोत्तर की राजनीति से थोड़ी बेहतर है. तमिलनाडु के वर्तमान मुख्यमंत्री एम के स्टालीन इस बार तीसरे स्थान पर पहुंच गए है.तमिल अभिनेता विजय जिन्हें उनके प्रशंसक थलपति कहते हैं की नई पार्टी तमिलागा वेट्ट्री कज़गम (टीवीके) ने अपने परिणाम से सभी को चौका कर रख दिया है . विजय ने मात्र 2 साल पूर्व ही अपनी पार्टी का गठन किया था और आज वे मुख्यमंत्री के पायदान पर पहुँच चुके है.अंबेडकर पेरियार और धर्मनिरपेक्ष की राजनीति का दावा करने वाले विजय का अब देखना यह होगा कि वह तमिलनाडु को कौन सी दिशा देते हैं.

असम चुनाव में भाजपा द्वारा स्वच्छ किए गए हेमंत विश्वकर्मा पुनः मुख्यमंत्री बनने वाले हैं, वहीं केरल में यूडीएफ गठबंधन की सरकार बनने वाली है जिसमें कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और पुडुचेरी में बीजेपी ले दे करके किसी ने किसी तरह सरकार बनाने वाली है. इस प्रकार भाजपा आसाम, बंगाल और पुडुचेरी में अपना भगवा लहराने में कामयाब हो रही है, वहीं केरल के चुनाव में गठबंधन से सत्ता में वापसी करने वाली कांग्रेस ने यह जता दिया है कि उसके बगैर बीजेपी का रथ रोकना आसान नहीं है. इस तरह से बीजेपी आज अपने दो राज्यों को बचाने के साथ-साथ बंगाल का किला भी अपने नाम करने में कामयाब हो चुकी है. आज देश के 70% विभाग पर बीजेपी का शासन है अब उसके सामने अगले वर्ष होने वाले उत्तर प्रदेश का चुनाव है जिसकी तैयारी में मोदी जी लग चुके है .

अगर इस देश की राजनीति इसी तरह बढ़ती रही तो यकीन मानिए की लोकतंत्र की ताकत कहे जाने वाला विपक्ष सिर्फ नाम का ही रह जाएगा क्योंकि जिस प्रकार से हाल ही में आप के सात सांसदों को बीजेपी ने अपने पाले में खींच लिया हैं. इसके पहले भी वह कई राज्यों में सरकारे तोड़ चुकी है, विधायक खरीद चुकी है पार्टियों को तोड़ दिया है और मूक जनता सब देख रही है तो फिर भगवान ही बचाए इस देश को. बीजेपी ने एक बात सबके दिलों दिमाग में बैठा दी है कि मुस्लिम हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है इसके इतर आज देश की जनता को कुछ दिखाई नहीं दे रहा. कुछ ही महीनो में आप देखेंगे की टीएमसी के आधे नेता बीजेपी में शामिल हो जाएंगे. ममता अकेली रह जाएंगी और हो सकता है सरकार अगले लोकसभा चुनाव से पहले उन्हें जेल में भी डाल दें. और यकीन मानिए यह सब कुछ बहुत ईमानदारी से होगा. अगर यही भारत का लोकतंत्र है तो फिर राजतंत्र क्या बुरा था? आज हम बांग्लादेश से भी कई मायनों में पीछे हो चुके हैं. शिक्षा की गुणवत्ता में हमें कोई विश्वास नहीं. हर रोज करोड़ों के पुल बह रहे हैं, आलीशान पार्टी कार्यालय बनाए जा रहे हैं पर अब भ्रष्टाचार कोई मुद्दा नहीं है. बीजेपी के बड़े-बड़े नेता खुलेआम ऐयाशी करते पकड़े जा रहे हैं, थाने में दरोगा को झापड़ मार रहे हैं पर सब कुछ कायदे से हो रहा है. बलात्कार और लिंचिंग मीडिया में कहीं दिखाई नहीं दे रहा अब यह सोशल मीडिया का मामला रह गया है. रोजगार के तो क्या कहने पूरा परिवार मिलकर कमा रहा है भला इससे बेहतर और क्या चाहिए. मणिपुर जल रहा है पर इससे हमें क्या लेना देना आप झालमुड़ी खाईये. फ़िलहाल बीजेपी उत्तर प्रदेश के चुनाव की तैयारी में लग चुकी है आप गैस की लाइन में खड़े रहिए .

निस्वार्थ प्रेम की हार या स्वार्थी रिश्तों की जीत?

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

जब सच बोलना गलती बन जाए और स्वार्थ रिश्तों की नई पहचान बन जाए रिश्ते जीवन का आधार होते हैं। ये हमें सहारा देते हैं, हमारी भावनाओं को दिशा देते हैं और यह एहसास कराते हैं कि हम अकेले नहीं हैं। लेकिन जब इन्हीं रिश्तों में सम्मान खत्म होने लगता है, तो उनका अस्तित्व केवल नाम का रह जाता है। जिस रिश्ते में आदर, समझ और सच्चाई न हो, वह धीरे-धीरे बोझ बन जाता है।

आज के समय में कई रिश्ते ऐसे हो गए हैं जहाँ एक व्यक्ति यह उम्मीद करता है कि दूसरा उसकी हर बात माने, उसकी हर गलती को नजरअंदाज करे और कभी उसकी कमियों की ओर इशारा न करे। वह चाहता है कि दूसरा व्यक्ति उसकी गलतियों को छुपाए, उसकी हाँ में हाँ मिलाए, लेकिन जब वही व्यक्ति उसकी गलती बताने की कोशिश करता है, तो उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं आता। वहाँ सच बोलना गलत माना जाता है, और चुप रहना ही समझदारी समझी जाती है। यही वह स्थिति है जहाँ रिश्ते अपनी असली पहचान खोने लगते हैं। क्योंकि सच्चा रिश्ता वह होता है जहाँ दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को बेहतर बनाने की कोशिश करें, न कि केवल खुश रखने के लिए झूठ का सहारा लें। अगर किसी रिश्ते में आपको अपनी बात कहने की आज़ादी नहीं है, अगर आपकी सच्चाई को ही आपकी गलती बना दिया जाता है, तो यह रिश्ता नहीं बल्कि एक समझौता है। कई बार ऐसा भी होता है कि सामने वाला व्यक्ति गलत लोगों की संगति में पड़ जाता है। वह ऐसे लोगों के साथ समय बिताने लगता है जो उसे गलत दिशा में ले जाते हैं, जो समाज में उसे मज़ाक का पात्र बनाते हैं। ऐसे समय में अगर आप उसे समझाने की कोशिश करते हैं, उसके भले के लिए उसे सच बताते हैं, तो भी वह आपको गलत ही समझता है। उसे लगता है कि आप उसकी आज़ादी में हस्तक्षेप कर रहे हैं, जबकि सच्चाई यह होती है कि आप केवल उसका भला चाहते हैं। और स्थिति तब और भी जटिल हो जाती है जब इंसान स्वयं ही उन लोगों का साथ चुनता है जो उसे अपमानित करते हैं। ऐसे में आपका दिया हुआ सम्मान भी उसे चुभने लगता है। आपकी सच्चाई, आपकी चिंता और आपका आदर–सब कुछ उसे गलत प्रतीत होने लगता है। वह आपको ही दोषी ठहराने लगता है, मानो आप ही उसकी असहजता का कारण हों। ऐसी परिस्थिति में बार-बार समझाने या खुद को सही साबित करने का प्रयास व्यर्थ हो जाता है। तब सबसे समझदारी भरा निर्णय यही होता है कि आप मूक दर्शक बन जाएँ–न इसलिए कि आपको परवाह नहीं, बल्कि इसलिए कि सामने वाला आपकी भावनाओं का मूल्य समझने की स्थिति में नहीं है। यह एक कड़वी सच्चाई है कि आज के दौर में स्वार्थपूर्ण रिश्तों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। लोग उन्हीं के साथ रहना पसंद करते हैं जो उनकी हर बात में सहमति जताते हैं, चाहे वह बात गलत ही क्यों न हो। उन्हें वह व्यक्ति पसंद नहीं आता जो सच बोलता है, जो उनकी गलतियों को सामने लाता है। क्योंकि सच सुनना आसान नहीं होता, और आज के समय में लोग आसानी और सुविधा को सच्चाई से ज्यादा महत्व देने लगे हैं। ऐसे में वह व्यक्ति, जो निस्वार्थ भाव से रिश्ता निभाता है, सबसे ज्यादा आहत होता है। वह अपनी भावनाओं को पूरी ईमानदारी से सामने रखता है, लेकिन बदले में उसे समझ नहीं मिलती, बल्कि गलतफहमी और दूरी मिलती है। धीरे-धीरे वह खुद को अकेला महसूस करने लगता है।

लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण बात समझनी चाहिए–हर जगह अपनी भावनाओं को व्यर्थ करना सही नहीं है। अगर कोई व्यक्ति आपके प्रेम, आपकी सच्चाई और आपकी नीयत को समझ नहीं पा रहा, तो बार-बार खुद को समझाने की कोशिश करना केवल आपको ही कमजोर करेगा। हर रिश्ते को बचाना जरूरी नहीं होता, खासकर वह जो आपको अंदर से तोड़ रहा हो। अपने मनोभावों पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। हर बात पर प्रतिक्रिया देना, हर बार खुद को साबित करना और हर गलत व्यवहार को सहना–ये सब आपको थका देता है। कभी-कभी दूरी बना लेना ही सबसे सही निर्णय होता है। यह कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की पहचान है।

इसका अर्थ यह नहीं कि आप प्रेम करना छोड़ दें या कठोर बन जाएं। बल्कि इसका अर्थ यह है कि आप अपनी भावनाओं को सही जगह निवेश करें। उन्हें उन लोगों के लिए बचाकर रखें जो आपकी कद्र करते हैं, जो आपके निस्वार्थ प्रेम को समझते हैं और जो आपके साथ समानता और सम्मान के साथ व्यवहार करते हैं। जीवन में ऐसे लोग जरूर मिलते हैं जो आपकी भावनाओं की कद्र करते हैं, जो आपको समझते हैं और जो आपके साथ सच्चे रिश्ते निभाते हैं। ऐसे रिश्ते ही वास्तव में हमें आगे बढ़ने की ताकत देते हैं। अंत में यही कहा जा सकता है कि रिश्ते तभी तक रिश्ते हैं जब तक उनमें सम्मान, सच्चाई और समझ बनी रहती है। जहाँ ये खत्म हो जाएं, वहाँ केवल एक औपचारिकता रह जाती है। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी भावनाओं का मूल्य समझें। उन्हें हर किसी पर खर्च करने के बजाय उन लोगों के लिए संभालकर रखें जो उन्हें समझने और निभाने की क्षमता रखते हैं। क्योंकि निस्वार्थ प्रेम बहुत कीमती होता है–और उसकी असली कीमत वही समझ सकता है, जो स्वयं भी सच्चा हो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

'लाइफ' की कीमत 'जैकेट' से भी कम

व्यंग्य

सुदर्शन कुमार सोनी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मौसम विभाग ने पहले ही चेतावनी दी थी–लहरें उठेंगी, हवा बदलेगी। पर हमारे यहाँ चेतावनी को सलाह समझा जाता है और सलाह को विकल्प। विकल्प भी ऐसा, जिसे चुनने की जल्दी सिर्फ उस वक्त होती है जब टिकट काउंटर पर भीड़ लगी हो। नतीजा–क्रूज़ लहरों के हवाले, और यात्री किस्मत के। मौसम चेतावनी देता है, सिस्टम सलाह देता है–और हादसा फैसला करता है।

बरगी डैम की लहरों ने इस बार पानी से ज्यादा सच उछाला है। 11 सैलानी डूबे–कहानी वही पुरानी, पटकथा वही सरकारी। फर्क सिर्फ इतना कि इस बार लाइफ जैकेटें थीं... मगर सिस्टम के पास। यात्रियों के लिए नहीं, फाइलों के लिए–सीलबंद, सुरक्षित, नियमों की आलमारी में टंगी हुई। हमारे यहाँ सुरक्षा 'पहनने' की चीज़ नहीं, 'दिखाने' की चीज़ है–इसलिए जैकेट भी फोटो में ठीक लगती है, पानी में नहीं।

मौसम विभाग ने पहले ही चेतावनी दी थी–लहरें उठेंगी, हवा बदलेगी। पर हमारे यहाँ चेतावनी को सलाह समझा जाता है और सलाह को विकल्प। विकल्प भी ऐसा, जिसे चुनने की जल्दी सिर्फ उस वक्त होती है जब टिकट काउंटर पर भीड़ लगी हो। नतीजा–क्रूज़ लहरों के हवाले, और यात्री किस्मत के। मौसम चेतावनी देता है, सिस्टम सलाह देता है–और हादसा फैसला करता है।

जांच होगी। जरूर होगी। हमारे यहाँ जांच समिति एंबुलेंस नहीं, एलबम है–हर दुर्घटना की फोटो सहेजने के लिए। पहले प्रेस नोट, फिर जांच समिति, फिर अंतरिम रिपोर्ट, फिर अंतिम रिपोर्ट... और अंत में रिपोर्ट का भी श्राद्ध। बीच में किसी जनरल मैनेजर का 'मुख्यालय अटैचमेंट '–जैसे तूफान में कागज़ का लंगर। एक-दो निलंबन–ताकि जनता को लगे कि न्याय की नाव भी चल रही है, भले ही बिना चप्पू के। यहाँ हर हादसे के बाद जिम्मेदारी 'ट्रांसफर' हो जाती है, जवाबदेही नहीं।

सबसे दिलचस्प बात–लाइफ जैकेट। बताया गया कि थीं, पर यात्रियों को पहनाई नहीं गईं। यानी सुरक्षा मौजूद थी, बस इस्तेमाल नहीं हुई। ठीक वैसे ही जैसे नियम मौजूद हैं, बस लागू नहीं होते; जिम्मेदार मौजूद हैं, बस जवाबदेह नहीं होते। एसओपी किताब में तैरती है, लोग पानी में डूबते हैं। और निलंबन अस्थायी होता है, लापरवाही स्थायी। और हमारे यहां के लोग भी अधिकारों की मांग नही करते भले ही मौत का अंदेशा हो ।

क्रूज़ के केबिन में सीलबंद जैकेटें थीं–जैसे सिस्टम ने सुरक्षा को तिजोरी में रख छोड़ा हो, ताकि कहीं खराब न हो जाए। बाहर लहरें थीं–बेखौफ, बेलगाम। अंदर कागज़ थे–बेहिसाब, बेअसर। और बीच में इंसान–बिना जैकेट, बिना जवाब। सिस्टम की लाइफ जैकेट इतनी मजबूत है कि उसमें सच भी डूब जाता है।

जांच कड़ाई से की जाएगी दोषियों को चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो बख्शा नही जाएगा। अब आयेंगे सुझाव- 'भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों'। यह वाक्य हमारे प्रशासन का राष्ट्रीय गान है। हर दुर्घटना के बाद इसे पूरे सुर-ताल में गाया जाता है। एक जांच कमेटी बनेगी या नही तो एक आयोग बनेगा–कुछ सेवानिवृत्त फिर से सेवा के वृत्त में आ जाएंगे। रिपोर्ट में लिखा जाएगा– 'सख्त कार्रवाई होनी चाहिए', 'मानक संचालन प्रक्रिया का पालन नहीं हुआ', 'जवाबदेही तय की जाए'। और फिर फाइल बंद–जैसे लहरें थम गई हों। गंगाधर तो चाहता है कि हादसा हो ही न पर दुर्भाग्य से नया हादसा होने के बाद इस जांच रिपार्ट पर सदैव की तरह धूल की गहरी परत चढ़ जाएगी। हम हादसों से नहीं सीखते, हम उनके लिए नए फॉर्मेट बना लेते हैं। ये हमारा ओल्ड व न्यू नार्मल दोनों है।

असल समस्या यह नहीं कि लाइफ जैकेट नहीं थी। समस्या यह है कि हमारे सिस्टम में 'लाइफ' की कीमत 'जैकेट' से भी कम है। सुरक्षा एक चेकलिस्ट है–टिक लगाने के लिए, न कि जान बचाने के लिए। और जब हादसा होता है, तो सिस्टम खुद लाइफ जैकेट पहन लेता है–जांच, निलंबन, अटैचमेंट की–ताकि वह डूबे नहीं। बरगी की लहरें शांत हो जाएँगी। खबरें भी। पर सवाल वही रहेगा–क्या अगली बार लाइफ जैकेट अलमारी से बाहर आएगी, या फिर किसी नई रिपोर्ट की जिल्द में सजी मिलेगी?

कानून और न्याय

एसआईआर प्रक्रिया-2

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

पुनरीक्षण से जुड़ी चिंताओं का निराकरण आवश्यक

जन परामर्श की कमी, शीर्ष स्तर पर कार्यान्वयन और अत्यधिक दस्तावेजीकरण आवश्यकताओं के कारण सार्वभौमिक मताधिकार को नुकसान पहुँचने का खतरा है। आधार नागरिकता का प्रमाण नहीं है। फिर भी यह वंचित समुदायों के लिए सबसे सुलभ पहचान पत्र है। इसलिए इसे निवास प्रमाणन के लिए क्या इसे स्वीकार किया जाना चाहिए, यह भी एक शाश्वत सवाल है।

विशेष गहन पुनरीक्षण का उद्देश्य अपात्र मतदाताओं को हटाना, नव पात्र या पूर्व में छूटे हुए मतदाताओं को जोड़ना और मतदाता सूची में त्रुटियों को सुधारना होता है, ताकि सूची सटीक हो और धोखाधड़ी को रोका जा सके। यह प्रवासियों तथा स्थानांतरित जनसंख्या के लिये पुनः पंजीकरण को सरल बनाता है और यह सुनिश्चित करता है कि मतदाता सूची संशोधित निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं के अनुसार अद्यतन रहे। साथ ही यह ''वन पर्सन, वन वोट अर्थात् एक व्यक्ति, एक वोट'' के सिद्धांत को सशक्त करता है। यह फर्जी और दोहराए गए मतदाताओं को हटाकर लोकतांत्रिक प्रणाली में जनता का विश्वास बनाए रखने में सहायक होता है, क्योंकि यह सूक्ष्म जाँच की प्रक्रिया सुनिश्चित करता है।

यह जागरूकता अभियानों के माध्यम से नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देता है और डोर-टू-डोर सर्वेक्षण तथा ऑनलाइन पंजीकरण विकल्पों के माध्यम से मतदाता पंजीकरण को सुलभ बनाता है। विशेष रूप से वंचित वर्गों को लाभ भी पहुँचाता है। प्रौद्योगिकी और नीतिगत सुधारों को अपनाना विशेष गहन पुनरीक्षण मतदाता सूचियों के डिजिटल एकीकरण को प्रोत्साहित करता है और प्रवासी मतदाताओं के लिये रिमोट वोटिंग जैसी नीतिगत पहलों को लागू करने में सहायक होता है। इससे सुलभता तथा दक्षता में सुधार होता है। उदाहरण के लिये, बिहार भारत का पहला राज्य बना जिसने म्ैम्ब्ठभ्त् ऐप के माध्यम से नगरपालिका चुनावों में मोबाइल ई-वोटिंग की पायलट परियोजना शुरू की। इसमें ब्लॉकचेन, फेशियल रिकग्निशन, बायोमेट्रिक स्कैनिंग और वोटर आईडी सत्यापन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया गया है।

मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण से जुड़ी चिंताएँ भी है। व्यापक मताधिकार वंचन का जोखिम आधार, राशन कार्ड या यहाँ तक कि मतदाता पहचान पत्र जैसे व्यापक रूप से उपयोग किये जाने वाले पहचान पत्रों को अस्वीकार करना, वंचित वर्गों पर अनुपातहीन रूप से प्रभाव डाल सकता है। परंपरागत रूप से, मतदाता सूची में 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों को उनके सामान्य निवास स्थान के आधार पर शामिल किया जाता है, लेकिन वर्तमान प्रक्रिया में उनके जन्म स्थान को भी ध्यान में रखा जा रहा है।

प्रवासी श्रमिकों पर प्रभाव, प्रवासी श्रमिकों, छात्रों और अस्थायी श्रमिकों के बार-बार स्थान परिवर्तन के कारण निवास का प्रमाण प्रस्तुत करना कठिन हो जाता है, जिससे उनकी मतदाता सूची से बहिष्करण का जोखिम बढ़ जाता है। नागरिकों के गुप्त राष्ट्रीय रजिस्टर का संदेह, जन्म प्रमाण पत्र या वंशानुगत दस्तावेजों की मांग को परोक्ष रूप से नागरिकता परीक्षण के रूप में देखा जा रहा है। इस कारण हाशिये पर और अल्पसंख्यक समुदायों के व्यवस्थित बहिष्करण की आशंका बढ़ जाती है। यह आशंका भी जताई जा रही है कि विषेष गहन पुनरीक्षण को पक्षपातपूर्ण ढंग से लागू किया जा सकता है, जिससे चुनावी अखंडता और समावेशी प्रतिनिधित्व कमजोर हो सकता है। जन परामर्श की कमी, शीर्ष स्तर पर कार्यान्वयन और अत्यधिक दस्तावेजीकरण आवश्यकताओं के कारण सार्वभौमिक मताधिकार को नुकसान पहुँचने का खतरा है। विशेष रूप से अशिक्षित और निराश्रित लोगों के लिये। विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया की अखंडता और सटीकता को किस प्रकार मजबूत किया जा सकता है? समावेशी दस्तावेजीकरण नीतियाँ, हालांकि आधार नागरिकता का प्रमाण नहीं है, फिर भी यह वंचित समुदायों के लिए सबसे सुलभ पहचान पत्र है। इसलिये इसे निवास प्रमाणन के लिये स्वीकार किया जाना चाहिये। इसे पूर्ववर्ती अभिलेखों से क्रॉस-वेरिफिकेशन द्वारा पूरक भी किया जाना चाहिये। सुदृढ़ सत्यापन और डेटा सटीकता, त्रुटिरहित और पारदर्शी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को सुनिश्चित करने के लिये, सुरक्षा उपायों के साथ आधार-वोटर आईडी लिंकिंग अधिकारी द्वारा घर-घर सत्यापन और राज्य निर्वाचन आयोग जैसे चुनावी प्राधिकरणों द्वारा नियमित ऑडिट किया जाना चाहिये। राजनीतिक और कानूनी सहमति, चुनाव आयोग को सभी हितधारकों, जिसमें नागरिक समाज भी शामिल हो, से परामर्श करना चाहिये। साथ ही विषेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े नियमों और अंतिम तिथियों को स्पष्ट करने के लिये जन-जागरूकता अभियान चलाने चाहिये।

इसके अतिरिक्त, विशेष न्यायाधिकरणों द्वारा न्यायिक निगरानी और निर्वाचन नामांकन अधिकारियों के लिये स्पष्ट दिशा-निर्देश अत्यंत आवश्यक हैं। इससे संवैधानिक सुरक्षा उपायों को बनाए रखा जा सकेगा तथा मनमाने ढंग से मतदाताओं के बहिष्करण को भी रोका जा सकता है। प्रौद्योगिकी-आधारित सुरक्षा उपाय, सक्षम विसंगति पहचान के माध्यम से संदेहास्पद विलोपन/जोड़ (जैसे किसी एक क्षेत्र से एक साथ कई नाम हटना) की पहचान की जानी चाहिए। ब्लॉकचेन-आधारित मतदाता लॉग लागू किए जाने चाहिए। इसके अलावा वास्तविक समय ट्रैकिंग डैशबोर्ड उपलब्ध कराया जाना भी आवष्यक है, ताकि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान छेड़छाड़ को रोका जा सके। साथ ही वंचित समूहों (जैसे विकलांग, आदिवासी समुदाय) के लिये विशेष शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। बहुभाषी हेल्पलाइन भी शुरू की जानी चाहिए और पुनरीक्षण के बाद नमूना सर्वेक्षण कराए जाने चाहिए, ताकि सटीक नामांकन सुनिश्चित किया जा सके और बहिष्करण को न्यूनतम किया जा सके।

विशेष गहन पुनरीक्षण मतदाता सूचियों की त्रुटिरहितता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन इसमें सटीकता और समावेशिता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। सर्वोच्च न्यायालय ने चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र को बरकरार रखा है। फिर भी मतदाता अधिकार से वंचित होने और पूर्वाग्रह को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। प्रौद्योगिकी आधारित सत्यापन, राजनीतिक सहमति, और न्यायिक निगरानी जैसे उपाय विशेष गहन पुनरीक्षण की पारदर्शिता और निष्पक्षता को मजबूत कर सकते हैं, जिससे लोकतांत्रिक वैधता के लिये एक न्यायसंगत और विश्वसनीय मतदाता सूची सुनिश्चित की जा सकती है।

निर्मल आनंद

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

रंग-बिरंग

खरबूजा हाथ में लेकर सुमेरा को अपने वे दोस्त याद आने लगे जिन्होंने उसके मुश्किल समय में अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया था। असली रंग दिखाने के मुहावरे की शुरुआत अट्ठारहवीं सदी में समुद्री डाकुओं के झंडे से जुड़ी हुई है। समुद्री जहाज़ों में फहराए जाने वाले राष्ट्रीय झंडे कलर्स कहलाते हैं। समुद्री डाकू अपने जहाज़ पर नकली झंडा लगाते थे। अपने शिकारी जहाज के नजदीक पहुंचने पर वे अपना असली कलर यानी झंडा फहराते थे। छद्म वेष छोड़ अपने असली धोखेबाज रूप में आने को टू कलर दिखाना कहते हैं। रंग तो प्रकाश का वह गुण है जो हमारी आँखों और मस्तिष्क द्वारा दृश्य स्पेक्ट्रम की विभिन्न वेवलेंथ को समझने से उत्पन्न होता है। अँधेरे में रंग दिखाई नहीं देते। प्रकाश का सबसे बड़ा स्रोत सूर्य है जो स्वयं अग्नि का धधकता हुआ विशाल गोला है। सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं। इस बात का संबंध निरंतर गतिमान रहनेवाले सूर्य के रथ में सात घोड़े जुते होने की अवधारणा से हो सकता है।

रंग बदलते देख सुमेरा ने खरबूजा खरीदा तो दुकानदार ने समझाया कि उसे एक और ले लेना चाहिए क्योंकि खरबूजा खरबूजे को देखकर रंग बदलता है। सच है, खरबूजा गिरगिट तो है नहीं कि अकेले ही रंग बदलने लगे। रंग बदलने में गिरगिट का कोई सानी नहीं। लेकिन, दोनों में फर्क है। खरबूजा संगत में अपनी रंगत बदलता है और गिरगिट दुश्मन को चकमा देने के लिए।

खरबूजा हाथ में लेकर सुमेरा को अपने वे दोस्त याद आने लगे जिन्होंने उसके मुश्किल समय में अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया था। असली रंग दिखाने के मुहावरे की शुरुआत अट्ठारहवीं सदी में समुद्री डाकुओं के झंडे से जुड़ी हुई है। समुद्री जहाज़ों में फहराए जानेवाले राष्ट्रीय झंडे कलर्स कहलाते हैं। समुद्री डाकू अपने जहाज़ पर नकली झंडा लगाते थे। अपने शिकारी जहाज के नजदीक पहुंचने पर वे अपना असली कलर यानी झंडा फहराते थे। छद्म वेष छोड़ अपने असली धोखेबाज रूप में आने को टू कलर दिखाना कहते हैं।

रंग तो प्रकाश का वह गुण है जो हमारी आँखों और मस्तिष्क द्वारा दृश्य स्पेक्ट्रम की विभिन्न वेवलेंथ को समझने से उत्पन्न होता है। अँधेरे में रंग दिखाई नहीं देते। प्रकाश का सबसे बड़ा स्रोत सूर्य है जो स्वयं अग्नि का धधकता हुआ विशाल गोला है। सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं। इस बात का संबंध निरंतर गतिमान रहनेवाले सूर्य के रथ में सात घोड़े जुते होने की अवधारणा से हो सकता है।

सुमेरा जानता था कि रंगों की संख्या में उलझने का कोई लाभ नहीं। वे अनेक होते हैं लेकिन प्राथमिक रंग तीन हैं, लाल पीला और नीला। दो प्राथमिक रंगों से मिलकर द्वितीयक रंग बनते हैं। जैसे नीला और पीला के मिश्रण से हरा। एक प्राथमिक तथा एक द्वितीयक रंग को मिलाकर तृतीयक रंग बनते हैं। रंगों के गर्म, शीतल या तटस्थ एहसास होते हैं। रंगों के प्रभाव का उपयोग कलर थेरेपी में किया जाता है। स्पेन में लोकप्रिय खेल बुल फाइट में सांड को लाल रंग का कपड़ा दिखाकर आक्रमण के लिए भड़काया जाता है जबकि वह कलर ब्लाइंड होता है, उसे लाल रंग दिखाई ही नहीं देता। बहुत से इंसान भी कलर ब्लाइंड होते हैं जो कुछ रंगों में भेद नहीं कर पाते। रंगों के शेड्स सैकड़ों होते हैं। उदाहरण के लिए शुद्ध सफेद और शुद्ध काले रंग के बीच दो सौ चौवन शेड्स होते हैं।

सुमेरा उलझन में पड़ गया कि कलर ब्लाइंड सुखी हैं या वह 'राजकुमार' जिसे 'रंग बदलती दुनिया में इंसान की नीयत ठीक नहीं' लगती। 'ग़ज़ल' का हीरो परेशान है कि 'रंग और नूर की बारात किसे पेश करूँ?' हमारे फिल्मी 'जानवर' को 'लाल छड़ी' खूब लड़ती नजर आती है। यहाँ 'बरसात' की हवा में मलमल का लाल दुपट्टा उड़ता दिख जाएगा। 'मि. एंड मिसेज 55' पूछ रहे हैं कि 'नीले आसमानी' नैना किसके लिए हैं? 'हमराज़' धरती के प्यार को 'नीले गगन के तले' पलते देख आनंदित होते हैं। नैना साहू को 'हरे कांच की चूड़ियाँ' बज उठने में बहुत आनंद आता है। पीली सरसों के खेत यश चोपड़ा को पसंद हैं तो मनोज कुमार को भी। फ़िल्मों में 'गुलाबी आँखें', 'सुरमई उजाला', 'चंपई अँधेरा' को भी पूरा सम्मान मिलता है।

हॉलीवुड में 'मेन इन ब्लैक' सफल होते हैं तो हिंदी सिनेमा में 'काला चश्मा' हिट है। काले रंग का सिक्का चलता है यहां। ग्लैमर के बाजार में 'दिल के काले', 'काली जुबान', 'काला तिल', 'काली काली जुल्फ़ें', 'काला धन', 'काला पत्थर', 'काला सोना' के शेयर का भाव कभी कम नहीं होता। होली के रंग हजार होते हैं जो बरसते हैं तो चुनरवाली भीगने लगती है। फिल्मी हीरोइनें अक्सर अपनी चुनरिया सजना के रंग में रंग लेती हैं। 'गुमनाम' मेहमूद की मानें तो काले होने से अधिक महत्वपूर्ण दिलवाले होना है। यद्यपि श्वेत का कंट्रास्ट श्याम होता है लेकिन फ़िल्मों में काले का कंट्रास्ट गोरा भी होता है। गोरे गाल और काले बाल आशिक़ों को लूट लेते हैं तो गोरे गाल पर काली आँखें कमाल का जादू करती हैं। 'रोटी' वाले हीरो ने गोरे रंग पर गुमान करने वाली लड़कियों को एक दिन गोरा रंग ढल जाने की चेतावनी भी दी है। 'आन मिलो सजना' की गुहार लगानेवाली ऐसी हीरोइन भी हैं जिन्हें रंग रंग के फूलों के बीच सजना के बिना कोई रंग नहीं भाता। शायद वह कलर ब्लाइंड की शिकार है जिसकी दवा 'सजना' जानते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान राम का रंग 'नीलाम्बुज श्यामल' अर्थात् नीले कमल के समान साँवला है। श्याम वर्ण के कारण कान्हा का नाम 'श्रीकृष्ण' है। 'तजौ मन, हरि बिमुखनि कौ संग' यानी दुष्टों का साथ न करने का उपदेश देते हुए महाकवि सूरदास ने रंगों की भीड़ में सबसे उत्तम रंग की व्याख्या की है- 'सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजो रंग'। सुमेरा अपने मन को ऐसी ही 'कारी कामर' बनाने की जुगत में लग गया।

विश्व अस्थमा दिवस

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

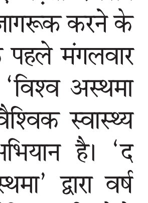

वैश्विक स्वास्थ्य संकट बनता अस्थमा

अस्थमा को लेकर भारत की स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है, जहां लगभग तीन करोड़ से अधिक लोग अस्थमा से ग्रस्त हैं और वैश्विक अस्थमा मृत्यु दर में भारत की हिस्सेदारी अत्यधिक है। सबसे गंभीर तथ्य यह है कि यहां लगभग 90 प्रतिशत मरीजों को समय पर और गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध नहीं हो पाता, जिससे यह बीमारी जानलेवा रूप ले लेती है। अस्थमा एक दीर्घकालिक गैर-संक्रामक रोग है, जो श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है। इसमें फेफड़ों का वायुमार्ग सूजकर संकरा हो जाती हैं और उनमें बलगम जमा हो जाता है, जिससे सांस लेने में कठिनाई, सीने में जकड़न, खांसी और घरघराहट जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। यह रोग अक्सर एलर्जी, प्रदूषण, मौसम परिवर्तन, धूल, धुआं और रासायनिक पदार्थों के संपर्क से बढ़ जाता है। अस्थमा का खतरा तब और बढ़ जाता है, जब व्यक्ति इन ट्रिगर कारकों के प्रति संवेदनशील हो जाता है और समय पर उपचार नहीं लेता।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनियाभर में 33 करोड़ से अधिक लोग अस्थमा से प्रभावित हैं और हर साल इससे लाखों लोगों की जान चली जाती है। अस्थमा आज केवल एक बीमारी नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है। इसीलिए बढ़ती श्वसन समस्याओं के प्रति समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से हर वर्ष मई महीने के पहले मंगलवार को एक खास विषय के साथ 'विश्व अस्थमा दिवस' मनाया जाता है, जो वैश्विक स्वास्थ्य चेतना का एक महत्वपूर्ण अभियान है। 'द ग्लोबल इनिशिएटिव फॉर अस्थमा' द्वारा वर्ष 2026 के लिए 'अस्थमा से पीड़ित सभी लोगों के लिए सूजनरोधी इनहेलर की उपलब्धता - अभी भी एक अत्यावश्यक आवश्यकता है' थीम निर्धारित की गई है, जो दुनियाभर में वर्तमान स्वास्थ्य व्यवस्था की एक बड़ी कमी की ओर संकेत करती है। यह थीम स्पष्ट करती है कि यदि मरीजों को समय पर उचित दवाएं, विशेषकर इनहेल्ड कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स, उपलब्ध हो जाएं तो अस्थमा से होने वाली अधिकांश गंभीर जटिलताओं और मृत्यु को रोका जा सकता है।

अस्थमा को लेकर भारत की स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है, जहां लगभग तीन करोड़ से अधिक लोग अस्थमा से ग्रस्त हैं और वैश्विक अस्थमा मृत्यु दर में भारत की हिस्सेदारी अत्यधिक है। सबसे गंभीर तथ्य यह है कि यहां लगभग 90 प्रतिशत मरीजों को समय पर और गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध नहीं हो पाता, जिससे यह बीमारी जानलेवा रूप ले लेती है। अस्थमा एक दीर्घकालिक गैर-संक्रामक रोग है, जो श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है। इसमें फेफड़ों का वायुमार्ग सूजकर संकरा हो जाती हैं और उनमें बलगम जमा हो जाता है, जिससे सांस लेने में कठिनाई, सीने में जकड़न, खांसी और घरघराहट जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। यह रोग अक्सर एलर्जी, प्रदूषण, मौसम परिवर्तन, धूल, धुआं और रासायनिक पदार्थों के संपर्क से बढ़ जाता है। अस्थमा का खतरा तब और बढ़ जाता है, जब व्यक्ति इन ट्रिगर कारकों के प्रति संवेदनशील हो जाता है और समय पर उपचार नहीं लेता।

विशेष चिंता का विषय यह है कि बच्चों में अस्थमा के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले दो दशकों में शहरी जीवनशैली, प्रदूषण और खानपान की बदलती आदतों ने बच्चों के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है। फास्ट फूड और जंक डाइट, जिनमें पोषण की कमी और हानिकारक तत्वों की अधिकता होती है, बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर रहे हैं और उन्हें एलर्जी व श्वसन रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त घरों में मौजूद डस्ट माइट्स, पालतू जानवरों के बाल, नमी और खराब वेंटिलेशन भी बच्चों में अस्थमा के प्रमुख कारण बनते जा रहे हैं। अस्थमा के विभिन्न प्रकार होते हैं, जिनमें अर्ली व्हीजर, मॉडरेट व्हीजर और परसिस्टेंट व्हीजर प्रमुख हैं। कुछ बच्चों में यह समस्या उम्र के साथ कम हो जाती है लेकिन कई मामलों में यह जीवनभर बनी रहती है या युवावस्था में फिर उभर जाती है। इसलिए प्रारंभिक अवस्था में सही निदान और उपचार अत्यंत आवश्यक है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इनहेलर को अस्थमा प्रबंधन का सबसे प्रभावी और सुरक्षित माध्यम माना जाता है क्योंकि यह दवा को सीधे फेफड़ों तक पहुंचाता है और कम मात्रा में अधिक प्रभाव देता है। इसके बावजूद समाज में इनहेलर के प्रति कई भ्रांतियां हैं, जिसके कारण लोग इसका उपयोग करने से बचते हैं और बीमारी को गंभीर बना लेते हैं। यहां यह समझना आवश्यक है कि अस्थमा के उपचार में केवल लक्षणों को नियंत्रित करना पर्याप्त नहीं है बल्कि

इसके मूल कारणों को समझकर दीर्घकालिक प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इनहेल्ड कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स सूजन को कम करते हैं और वायुमार्ग को सामान्य बनाए रखने में मदद करते हैं, जिससे अस्थमा के दौरे की संभावना कम हो जाती है। यही कारण है कि इस वर्ष की थीम में इन दवाओं की सार्वभौमिक उपलब्धता पर विशेष जोर दिया गया है। यदि हर मरीज तक यह उपचार पहुंच सके तो अस्थमा से होने वाली मौतों में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है।

भारत जैसे विकासशील देश में अस्थमा की चुनौती कई आयामों से जुड़ी हुई है। यहां स्वास्थ्य सेवाओं की असमान पहुंच, आर्थिक असमानता, जागरूकता की कमी और सामाजिक कलंक इस समस्या को और जटिल बना देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्थिति और भी गंभीर है, जहां लोग अस्थमा को सामान्य खांसी या सांस फूलने की समस्या समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। समय पर जांच न होने के कारण बीमारी धीरे-धीरे गंभीर रूप ले लेती है और इलाज कठिन हो जाता है। वायु प्रदूषण अस्थमा के प्रमुख कारणों में से एक है, विशेषकर भारत के महानगरों में। वाहनों का धुआं, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल और बढ़ता तापमान श्वसन तंत्र को लगातार प्रभावित कर रहे हैं। दिल्ली जैसे शहरों में तो वायु गुणवत्ता अक्सर खतरनाक स्तर तक पहुंच जाती है, जिससे अस्थमा रोगियों के लिए स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। इसके अलावा धूम्रपान और सैकेंड हैंड स्मोक भी अस्थमा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अस्थमा के बढ़ते मामलों में जीवनशैली का भी बड़ा योगदान है। शारीरिक गतिविधियों में कमी, तनावपूर्ण जीवन, असंतुलित आहार और नींद की कमी शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करते हैं। ऐसे में व्यक्ति छोटी-छोटी एलर्जी से भी प्रभावित होने लगता है। इसलिए अस्थमा के प्रबंधन में दवाओं के साथ-साथ स्वस्थ जीवनशैली अपनाना भी उतना ही आवश्यक है। नियमित व्यायाम, योग, संतुलित आहार और स्वच्छ वातावरण इस रोग को नियंत्रित करने में सहायक हो सकते हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि अस्थमा पूरी तरह से ठीक होने वाली बीमारी नहीं है लेकिन इसे नियंत्रित किया जा सकता है। यदि मरीज नियमित रूप से डॉक्टर की सलाह का पालन करे, दवाओं का सही उपयोग करे और ट्रिगर कारकों से बचाव करे तो वह सामान्य जीवन जी सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि मरीज और उसके परिवार को इस बीमारी के बारे में सही जानकारी हो और वे किसी भी प्रकार की भ्रांति या डर से दूर रहें।

सरकार और स्वास्थ्य संस्थाओं की जिम्मेदारी है कि वे अस्थमा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक अभियान चलाएं और दवाओं को सुलभ व किफायती बनाएं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर इनहेलर और आवश्यक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ ही स्कूलों और समुदाय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कर बच्चों और अभिभावकों को इस रोग के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। विश्व अस्थमा दिवस का महत्व इसी बात में निहित है कि यह हमें याद दिलाता है कि अस्थमा केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक चुनौती भी है। इससे निपटने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है, जिसमें सरकार, स्वास्थ्य विशेषज्ञ, शिक्षण संस्थान और आम नागरिक सभी की भागीदारी जरूरी है। आज जब दुनिया तेजी से शहरीकरण, प्रदूषण और बदलती जीवनशैली की ओर बढ़ रही है, ऐसे में अस्थमा जैसी बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम समय रहते सचेत हों और इस बीमारी को गंभीरता से लें। विश्व अस्थमा दिवस हमें यही संदेश देता है कि सही जानकारी, समय पर उपचार और जागरूकता के माध्यम से हम इस बीमारी पर नियंत्रण पा सकते हैं। हमें यह समझना होगा कि सांसें जीवन का आधार हैं और इन्हें सुरक्षित रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि हम मिलकर प्रयास करें, स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाएं और हर मरीज तक आवश्यक दवाएं पहुंचाएं तो अस्थमा से होने वाली मौतों को रोका जा सकता है और एक स्वस्थ, सुरक्षित और सशक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है।

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने
लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

शिक्षा विभाग के प्रयोगों ने बच्चों को कर दिया है शिक्षा से दूर

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के नियमों के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों को नए भवन से अधिकतम 2 किलोमीटर तक की दूरी तक ही शिफ्ट किया जा सकता है। इसी प्रकार माध्यमिक विद्यालयों को अधिकतम 5 किलोमीटर तक की दूरी तक ही शिफ्ट किया जा सकता है। किन्तु उज्जैन में शिक्षा का अधिकार अधिनियम के नियमों की खुलकर अवहेलना की जा रही है। इस प्रकार शिक्षा विभाग के प्रयोगों द्वारा सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले गरीब परिवारों के बच्चों को शिक्षा से दूर करने का प्रयास किया जा रहा है! मध्यप्रदेश में पहले सीएम राइज स्कूल और अब सांदीपनि के नाम से खोले जा रहे स्कूल शिक्षा विभाग के प्राथमिकता वाले कार्यों में शामिल है। उज्जैन से करीब 7 किलामीटर दूर ग्राम दाऊदखेड़ी में 54 करोड़ 27 लाख की लागत से एक बड़ी बिल्डिंग बनाई गई है। भवन तैयार होते ही इसी साल से समीप के 11 स्कूलों को इस स्कूल में मर्ज करने का काम आरंभ कर दिया गया है। इन 11 स्कूलों के नाम है - सांदीपनि विद्यालय महाराजवाड़ा क्रमांक 3, प्रावि पालखेड़ी, प्रावि सांवराखेड़ी, मावि चांदमुख, प्रावि सिकंदरी, मावि गोठड़ा, मावि नूतन जयसिंहपुरा, मावि महाकाल मैदान, उमावि माधवगंज, बालक उमावि महाराजवाड़ा क्रमांक 2 और कन्या उमावि सराफा।

ग्राम दाऊदखेड़ी के सांदीपनि स्कूल में 11 प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को शिफ्ट करने की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इन स्कूलों में कुल 2,978 विद्यार्थी अध्ययनरत है। शिक्षा विभाग के प्रयोगों द्वारा इन करीब 3 हजार बच्चों को शिक्षा से वंचित करने का प्रयास किया जा रहा है! उल्लेखनीय यह भी है कि इन सभी सरकारी स्कूलों में गरीब परिवारों के छात्र-छात्राएं ही पढ़ रहे हैं।

शासकीय प्राथमिक विद्यालय पालखेड़ी जिसे दाऊदखेड़ी में शिफ्ट किया जा रहा है। उसकी दूरी 3.5 किलोमीटर है। इसी प्रकार दो माध्यमिक विद्यालयों नूतन जयसिंहपुरा और शासकीय विद्यालय महाकाल मैदान की दाऊदखेड़ी से दूरी करीब 7 किलोमीटर है। इतनी दूर बच्चों को शिफ्ट करना उनके अधिकारों का उल्लंघन है।

इसी प्रकार कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक की कक्षाओं के हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल को शिफ्ट करने से पहले शिक्षा विभाग को अपने भोपाल स्थित मुख्यालय से अनुमति लेना जरूरी है! किन्तु शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने अनुमति लेने के पहले ही 30 मार्च 2026 को उक्त स्कूलों को दाऊदखेड़ी में शिफ्ट करने का आदेश जारी कर दिया है। अब आदेश जारी करने के बाद शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय माधवगंज, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सराफा और बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 2 के प्रस्ताव भोपाल भेजे गए है। शासकीय माध्यमिक विद्यालय नूतन जयसिंहपुरा के 300 विद्यार्थियों को, शासकीय माध्यमिक विद्यालय महाकाल मैदान के 352 विद्यार्थियों को 7 किलोमीटर दूर दाऊदखेड़ी में शिफ्ट करने के आदेश जारी किए गए है। इसी प्रकार उच्चतर माध्यमिक विद्यालय माधवगंज के 370 विद्यार्थी, बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराजवाड़ा क्रमांक 2 के 360 विद्यार्थियों तथा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सराफा के 580 विद्यार्थियों को भी उनके वर्तमान स्कूल से 7 किलोमीटर दूर शिफ्ट करने का आदेश जारी किया गया है। शिक्षा विभाग के इन प्रयोगों के कारण 2 स्कूल की समिति शासकीय माध्यमिक विद्यालय महाकाल मैदान और शासकीय माध्यमिक विद्यालय नूतन जयसिंहपुरा कोर्ट पहुंच गई है। यही नहीं 60 से अधिक छात्राओं के पालकों ने अपनी बच्चियों को स्कूल से निकालने के आवेदन भी दे दिए है। किन्तु स्कूल द्वारा उन्हें टीसी नहीं दी जा रही है। आश्चर्य की बात यह भी है कि शिफ्ट किए जा रहे 11 स्कूलों में से 2 गर्ल्स स्कूलों को भी दाऊदखेड़ी शिफ्ट कर दिया गया है, जबकि गर्ल्स स्कूलों को केवल गर्ल्स स्कूल में ही शिफ्ट किया जाना चाहिए !

प्रदेश के मुखिया डॉ. मोहन यादव उज्जैन के ही हैं। उन्हीं के गृहनगरी में गरीब परिवारों के विद्यार्थियों के साथ यह सबकुछ हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए। आशा है मुख्यमंत्री इस दिशा में तुरंत पहल कर 7 किलोमीटर दूर शिफ्ट किए जा रहे विद्यार्थियों को न्याय प्रदान करेंगे।

छोटे क्षेत्रों से भी वैश्विक स्तर की खबरें बनाई जा सकती हैं, बशर्ते पत्रकार अपनी कलम को बिकने न दे और सत्य के प्रति प्रतिबद्ध रहे : प्रवीण शर्मा

सामाजिक संस्था जय हो द्वारा नारद जयंती पर धार के पत्रकारों को देवर्षि नारद सम्मान -2026 से किया सम्मानित

धार। धार शहर की सामाजिक संस्था जय हो द्वारा नारद जयंती के अवसर पर पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान देने पर धार के वरिष्ठ पत्रकारों को देवर्षि नारद सम्मान -2026 से सम्मानित किया । धार शहर के होटल देव में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा, उज्जैन स्वामी शैलेषानंद गिरी जी महाराज थे। मुख्य वक्ता एवं विशिष्ट अतिथि प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण शर्मा मंचासीन थे। अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार एवं संस्था जय हो के संस्थापक डॉ. अशोक शास्त्री ने की। विशेष अतिथि भाजपा नेता,समाजसेवी समंदसिंह पटेल, राष्ट्रीय हास्य कवि संदीप शर्मा, भोज शोध संस्थान के निदेशक दीपेन्द्र शर्मा, संस्था जय हो के संयोजक धर्मेंद्र जोशी, पत्रकार साथी, शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत संस्था जय हो के पदाधिकारियों एवं पत्रकार साथियों ने किया। संस्था जय हो के पदाधिकारियों द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेट किया।

मुख्य वक्ता प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय में पत्रकारिता अनेक चुनौतियों से घिरी है, लेकिन जो व्यक्ति संघर्ष के साथ ईमानदार और श्रेष्ठ पत्रकारिता करता है, उसे न केवल यश मिलता है बल्कि समाज का भी कल्याण होता है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार अमझेरा जैसे छोटे अंचल से निकलकर उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई और यह सिद्ध किया कि छोटे क्षेत्रों से भी वैश्विक स्तर की खबरें बनाई जा सकती हैं, बशर्ते पत्रकार अपनी कलम को बिकने न दे और सत्य के प्रति प्रतिबद्ध रहे। उन्होंने यह भी कहा कि पत्रकारिता में गहराई से अध्ययन करना ही सफलता का मूल मंत्र है तथा पत्रकारों की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना शासन की प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिए, तभी वे अपने दायित्वों का सही निर्वहन कर सकेंगे।

महामंडलेश्वर स्वामी शैलेषानंद गिरी जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि पत्रकारिता अत्यंत महत्वपूर्ण और जिम्मेदारीपूर्ण कार्य है, जिसके लिए पत्रकार का खोजी स्वभाव होना अनिवार्य है। उन्होंने चिंता जताई कि वर्तमान में कुछ लोग गलत मानसिकता के साथ इस क्षेत्र में आ गए हैं, जिससे तथ्यों की सत्यता प्रभावित होती है, जबकि सच्चाई को खोजकर समाज के सामने प्रस्तुत करना ही पत्रकार का धर्म है। उन्होंने कहा कि बढ़ती भ्रामक सूचनाओं पर नियंत्रण जरूरी है और पत्रकारिता को एक गरिमामय पेशा बनाए रखने के लिए इसमें शैक्षणिक योग्यता और स्पष्ट मापदंड तय किए जाने चाहिए। साथ ही, उन्होंने पत्रकारों की सामाजिक सुरक्षा के लिए कानून बनाने की मांग का समर्थन करते हुए आश्वासन दिया कि संत समाज इस दिशा में निरंतर प्रयास करता रहेगा।

डॉ. अशोक शास्त्री ने कहा कि वर्तमान में पत्रकार और पत्रकारिता को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैं। आज पत्रकारों को समाज और सरकार द्वारा सहायता दिया जाना समय की मांग है। संस्था जय हो नारद जयंती और पत्रकारों का सम्मान प्रतिवर्ष करेगी।

राष्ट्रीय हास्य-व्यंग्य कवि संदीप शर्मा ने कहा कि आज के दौर में पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न खड़े हो रहे हैं, इसलिए निष्पक्षता और विश्वास को सर्वोच्च प्राथमिकता देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि चाहे प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, यदि दोनों ही क्षेत्रों में विश्वसनीयता के साथ कार्य किया जाए तो पत्रकारिता की साख मजबूत होगी। उन्होंने पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बताते हुए कहा कि यह अन्य तीन स्तंभों को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए समाज और शासन दोनों की जिम्मेदारी है कि वे पत्रकारों की सामाजिक सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाएं। संचालन वरिष्ठ पत्रकार अनिल तिवारी ने किया। आभार वरिष्ठ पत्रकार सुनिल दौराया ने व्यक्त किया।

सुबह सवेरे के वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा देवर्षि नारद सम्मान -2026 से सम्मानित

सुबह सवेरे के वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा को लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने खासकर पत्रकारिता विधा में सकारात्मक भूमिका निभाने, अपने चर्चित कॉलम ' Mantra of Success' से मोटिवेशनल टिप्स खासकर यूथ को मोटिवेट करने पर देवर्षि नारद सम्मान -2026 से सम्मानित किया गया। धार के अन्य वरिष्ठ पत्रकार अशोक मित्तल, प्रेमविजय पाटिल, रेणु अग्रवाल भी देवर्षि नारद सम्मान -2026 से सम्मानित हुए।

पत्रकारों की सामाजिक सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए बनेगी सुरक्षा निधि

प्रवीण शर्मा की पहल पर पत्रकारों की सामाजिक सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए धार में पत्रकार सुरक्षा निधि बनाई जाएगी। जो पत्रकारों को आकस्मिक आपदा और परेशानी में सहायता प्रदान करेगी। इस पहल का पत्रकारों ने बहुत स्वागत किया। महामंडलेश्वर श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा, उज्जैन स्वामी शैलेषानंद गिरी जी महाराज ने पत्रकार सुरक्षा निधि में 1 लाख 51 हज़ार, राष्ट्रीय हास्य-व्यंग्य कवि संदीप शर्मा ने 1 लाख, समाजसेवी हरीश रघुवंशी ने 5100 दिए जाने की घोषणा की। प्रवीण शर्मा ने अपने पूज्य पिताजी स्व. मन्नालाल शर्मा जी की स्मृति में धार के सर्वश्रेष्ठ रिपोर्टर को हर वर्ष 21 हज़ार का पुरस्कार देने की घोषणा की।

जीवन क्या है?

नितिन वैद्य

यह प्रश्न जब हृदय में उठता है, तो केवल बुद्धि नहीं, आत्मा भी उत्तर खोजने लगती है। जीवन उन लोगों के लिए अनुपम वरदान है, जो हर क्षण को प्रसाद मानकर स्वीकार करते हैं, जो छोटे-छोटे पलों में भी आनन्द ढूँढ लेते हैं।

परन्तु वही जीवन उन लोगों के लिए बोझ बन जाता है, जो हर घटना को तौलते हैं, हर रिश्ते को परखते हैं और हर परिस्थिति का अत्यधिक विश्लेषण करते रहते हैं। जीवन कोई पहेली नहीं, जिसे बैठकर सुलझाया जाए। जीवन तो एक अनुभूति है जिसे केवल जिया जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। इसे शब्दों में बाँधने का प्रयास अवश्य किया जा सकता है, पर इसकी सम्पूर्णता को शब्द कभी व्यक्त नहीं कर सकते। जीवन एक रहस्य है और यह रहस्य धीरे-धीरे खुलता है, तब जब मनुष्य संघर्षों को स्वीकार करता है।

जीवन प्रश्न नहीं, एक अभियान है।जीवन सवाल नहीं, एक चुनौती है।

जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य रखता है, जो आँधियों में भी दीपक की तरह जलता रहता है, जो टूटकर भी बिखरता नहीं बल्कि स्वयं को फिर से सँजो लेता है , वही जीवन के वास्तविक अर्थ को समझ पाता है।कई लोग जीवन को समझने के लिए प्रबंधन की पुस्तकों का सहारा लेते हैं, ज्ञानीजनों के चरणों में बैठते हैं। वहाँ से उन्हें सांत्वना मिलती है हृदय को क्षणिक शांति मिलती है।

किन्तु सांत्वना और समाधान में बहुत अंतर होता है। सांत्वना आँसुओं को पोंछ देती है, पर समाधान उन आँसुओं का कारण मिटा देता है। और जीवन का सच्चा मार्ग समाधान से ही प्रशस्त होता है। जीवन का सबसे सूक्ष्म और प्रभावशाली तत्व है संगति।

मनुष्य जैसा देखता है, जैसा सुनता है, जैसा वातावरण उसे घेरता है ,वैसा ही वह बनने लगता है। हम जिन लोगों के साथ समय बिताते हैं, जिनके साथ अपने सुख-दुःख बाँटते हैं, उनके विचार अनजाने ही हमारे भीतर घर बना लेते हैं। यही विचार हमारे कर्म बनकर हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं।

विचार ही जीवन की धुरी हैं।

यदि वे प्रेम, करुणा, सकारात्मकता और विकास से जुड़े हों, तो वे हमें ऊँचाइयों तक पहुँचा देते हैं। किन्तु यदि वही विचार ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार और नकारात्मकता से जुड़ जाएँ, तो मनुष्य का पतन निश्चित है। संगति से उपजे यही विचार जीवन के रहस्य की कुंजी हैं। जीवन सरल नहीं है।बिना संघर्ष के कोई महान नहीं बनता। पत्थर जब तक हथौड़े और छेनी के आघात नहीं सहता, तब तक वह पूजनीय प्रतिमा नहीं बनता। उसी प्रकार मनुष्य भी कठिनाइयों की अग्नि में तपकर ही कुन्दन बनता है।

दुःख हमें तोड़ने नहीं आते, वे हमें गढ़ने आते हैं। जीवन हर दिन हमें कुछ सिखाता है कभी मुस्कुराकर, कभी रुलाकर।जो विनम्रता से सीख लेता है, वही आगे बढ़ता है। जो झुकना जानता है, उसी में जीवन की सच्ची शक्ति होती है। अकड़ और अहंकार तो निर्जीवता के प्रतीक हैं; जीवन तो प्रवाह है, लचीलापन है, समर्पण है। अतः जीवन को केवल जीना नहीं, उसे महसूस करना चाहिए।

हर सुबह को एक नयी आशा की तरह, हर संघर्ष को एक अवसर की तरह और हर सम्बन्ध को ईश्वर के वरदान की तरह स्वीकार करना चाहिए।

जीवन तब सुंदर बनता है, जब हम उसे शिकायत नहीं, कृतज्ञता के साथ जीते हैं।जब हम परिस्थितियों को दोष नहीं देते, बल्कि स्वयं को सशक्त बनाते हैं। आइए, जीवन को जिंदादिली, श्रद्धा और संवेदनशीलता के साथ जियें 'क्योंकि जीवन क्षणभंगुर अवश्य है, पर उसकी अनुभूति अमर है।'

'श्री कृष्ण शरणम् मम'

स्वर्गीय खंडेलवाल स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में जीपीएस टीम विजेता

सोहागपुर। स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति में आयोजित विधायक ट्रॉफी 3 सोहागपुर प्रीमियर लीग नाइट टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता में रविवार की रात 3 प्रतियोगिता आयोजित की गई। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि प्रथम प्रतियोगिता पालीवालजी 11 एवं जीपीएस टीम के मध्य खेला गया। जिसमें जीपीएस टीम विजेता रही। दूसरा मैच शिवांश क्लब और पालीवालजी 11 के बीच हुआ। जिसमें शिवांश क्लब ने जीत हासिल की। तीसरा मैच जीपीएस और शिवांश क्लब के बीच खेला गया। जिसमें जीपीएस टीम विजेता रही।इस अवसर पर एजीपी वकील शंकरलाल मालवीय, भाजपा ब्लाक अध्यक्ष अश्विनी सरोज,सरदार वार्ड पार्षद रविशंकर उइके, वकील अख्तर खान तहसील पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान, पूर्व पत्रकार संघ अध्यक्ष देवेंद्र कुशवाहा, पत्रकार आरिफ खान, जनप्रतिनिधि, भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने आगे बताया कि रविवार को आयोजित तीनों क्रिकेट प्रतियोगिता की स्कोरिंग उत्सव जायसवाल उत्कर्ष दुबे एवं नितिन चौरसिया ने की।

सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय में कांग्रेस का सम्मेलन बहुत कुछ कह गया

सोहागपुर। सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय पर सोहागपुर विधानसभा के माखननगर एवं सोहागपुर ब्लाक के कार्यकताओं, नेताओं, जनप्रतिनिधियों एवं मंडलम के पदाधिकारियों को उर्जा प्रदान करने के लिए प्रदेश कांग्रेस सह प्रभारी उषा नायडू ने रविवार को नगर के विख्यात वाटिका ग्रार्डन में सम्मेलन में कार्यकताओं की होसला अफलाजाई की। जिसमें पदाधिकारियों, नेताओं, जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं में आपसी तालमेल बैठाने का आवश्यक उद्बोधन दिया गया। ताकि आपसी मतभेद सोशल मीडिया ने जाएं। उषा नायडू ने ऐसी कोई बात है कि कोई आपकी बात नहीं सुन रहा हमें मैसेज भेजें।यह मैसेज दिल्ली में बैठे आलाकमान कांग्रेस नेता राहुल गांधी इसकी मानीटिरिग करते हैं। का अच्छा संदेश रहा। लेकिन इस सम्मेलन की उल्लेखनीय बात यह रही 2018 के सोहागपुर विधानसभा चुनाव के कांग्रेस प्रत्याशी रणधीरसिंह पटेल की अनुपस्थिति बहुत कुछ कह गई। इसके की अर्थ निकाले जा सकते हैं। इसके अलावा उषा नायडू ने एक बात बहुत ही महत्वपूर्ण कह दी कि सोहागपुर विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने का प्रयत्न करें। महिलाओं की भागीदारी से ही हम चुनाव में जीत का सेहरा बांधेंगे।उनका सोच काफी महत्वपूर्ण रही। लेकिन इस सम्मेलन मात्र तीन महिलाएं मंचासीन थी। जिसमें प्रदेश कांग्रेस सह प्रभारी उषा नायडू, प्रदेश युथ कांग्रेस अध्यक्ष सुरेखा शाह एवं माखन नगर पंचायत परिषद उपाध्यक्ष रशिका डेरिया थी। किन्तु कार्यकर्ता , जनप्रतिनिधियों या पूर्व जनप्रतिनिधि में किसी महिलाओं की इतने बड़े आयोजन में महिलाओं को भागीदारी नहीं होना यह कांग्रेस के लिए ख़तरे की घंटी है। यदि कांग्रेस ने आगामी चुनाव तक महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने में कोताही बरती तो निश्चित ही कांग्रेस के लिए आगामी विधानसभा चुनाव में सोहागपुर विधानसभा सीट जीतना दूर की कोड़ी सिद्ध होगी। इस बैठक में जिला जनपद पंचायत सदस्य एवं वरिष्ठ पत्रकार हाकमसिंह पटेल भोपाल ने भी महत्वपूर्ण बात कह दी। कि माखननगर से ही भाजपा को करीबन 24 हजार मतों से लीड मिली। माखन नगर में धरातल पर कांग्रेस एवं मंडलम एवं कांग्रेस के पदाधिकारियों को तालमेल करके कार्य करना चाहिए। कांग्रेस को पहले बूथ जिताने का संकल्प लेना होगा। इस सम्मेलन को मात्र इतना ही कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यह कार्यकताओं, नेताओं में सामंजस्य स्थापित करने एवं ऊर्जा का संचार करना था। ताकि सोहागपुर विधानसभा चुनाव में भाजपा की अजेय सीट को भेद सकें।

इस प्रतिनिधि चर्चा करते प्रदेश सह प्रभारी उषा नायडू ने कहा कि प्रदेश में किसानों की फसल लेने के मामले में खरी नहीं उतरी है। किसानों के उत्थान में भाजपा सरकार फ़ैल हो गई है। वहीं आपने कहा कि इन्दौर के भागीरथीपुरा में अभी भी प्रदुषित पानी मिल रहा है । मैं कल वहीं थीं। मैं की जगहों पर गई। इस प्रदूषित पानी से केंसर जैसी घातक बीमारियां पैर पसार रही हैं। प्रदेश सरकार को इस मामले में तत्काल कदम उठाकर नागरिकों के जीवन की रक्षा करनी चाहिए।

विश्व संवाद केंद्र मालवा द्वारा देवर्षि नारद जयंती पर विचार गोष्ठी

'डिजिटल युग में स्व का जागरण, सोशल मीडिया और स्वदेशी विमर्श' पर हुआ मंथन

धार। देवर्षि नारद जयंती के पावन अवसर पर विश्व संवाद केंद्र मालवा, नगर के समस्त पत्रकारगण द्वारा एक विचारगोष्ठी का सफल आयोजन संपन्न हुआ। अतिथियों द्वारा देवर्षि नारदजी के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक संचार माध्यमों, विशेषकर सोशल मीडिया, की भूमिका को भारतीय स्वदेशी चिंतन एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संदर्भ में समझना और आधुनिक डिजिटल परिवेश में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के 'स्व' अर्थात् आत्मबोध, सांस्कृतिक पहचान और मूल्यों के महत्व को रेखांकित करना था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में कपिल मिश्रा जिला जनसंपर्क अधिकारी उज्जैन रहे। अध्यक्षता रेणु अग्रवाल ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमती अग्रवाल ने कहा कि पत्रकारिता हम सभी के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन आपसी सहयोग और समन्वय के साथ यदि पत्रकारिता करेंगे तो यह सार्थक ओर परिणामकारी सिद्ध होगी। मुख्य वक्ता के रूप में कपिल मिश्रा ने कहा कि डिजिटल युग में सूचना का प्रवाह अत्यंत तीव्र हो गया है, किंतु इस तेज़ी के बीच अपने 'स्व' को पहचानना और उसे बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति अपने मूल्यों, परंपराओं और संस्कृति से जुड़ा रहे, तो डिजिटल माध्यम भी राष्ट्रनिर्माण का सशक्त साधन बन सकता है। युवा पीढ़ी को अपने 'स्व' की पहचान करते हुए डिजिटल माध्यमों का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करना चाहिए।

कुंभ जैसे समृद्ध, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आयोजनों को आईआईटी बाबा, मोनालिसा तक सीमित कर उलझाया जाना चिंतनीय है

आज हम देखते है कि देश में कोई घटना- दुर्घटना घटित होती हैं तो उसके नकारात्मक पक्षों को बहुत ही अधिक बढ़ा चढ़ा कर प्रचारित किया जा रहा है, जो सही नहीं है। हमें मानवीय संवेदनाओं की गंभीरता को समझना होगा। कुंभ जैसे समृद्ध, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आयोजनों को आईआईटी बाबा, मोनालिसा तक सीमित कर उलझाया जाना चिंतनीय है। मीडिया और सोशल मीडिया पर क्या कहना है ? क्या दिखाना है ? यह समाजहित और राष्ट्रहित मे होना चाहिए।

पश्चिम बंगाल,असम और पुंडुचेरी विधानसभा चुनाव में भाजपा की ऐतिहासिक विजय पर भाजपा कार्यालय में भव्य उत्सव

धार। पश्चिम बंगाल,असम और पांडुचेरी विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की प्रचंड एवं ऐतिहासिक जीत के उपलक्ष्य में सोमवार को भाजपा जिला कार्यालय धार में हर्षोल्लास के साथ विजय उत्सव मनाया गया। देशभर में आए चुनाव परिणामों में भाजपा ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है–विशेषकर पश्चिम बंगाल में ऐतिहासिक बढ़त, असम में लगातार मजबूती, तथा पांडुचेरी में एनडीए की स्थिति मजबूत रहने से कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह देखा गया। इस शुभ अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती, विधायक नीना वर्मा के नेतृत्व में

कार्यकर्ताओं ने पटाखे फोड़कर, रसगुल्ले मिठाई बांटकर तथा झालमुड़ी खिलाकर एक-दूसरे को बधाइयाँ दीं। पूरा वातावरण 'भारत माता की जय' और 'भाजपा ज़िंदाबाद' के नारों से गूंज उठा। इस विजयी उत्सव कार्यक्रम में भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय भाजपा जिला महामंत्री राकेश पटेल जिला उपाध्यक्ष राखी राय, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष ममता जोशी , भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, मोहित तातेड ,मनीष प्रधान ,युवा मोर्चा जिला महामंत्री अंकित भावसार, विपिन राठौर, शैलेष कामरेड राजेश हरोड़, सनी हाड़ा हरनाम सिंह टोनी ठाकुर प्रकाश टामकिया कालीचरण सोनवानीया, हुकुम लश्करी ,लव प्रजापति ,सीमा सोनी ,सुरेश प्रजापत , सोनिया राठौर, बादल मालवीय , करण पटेल , महेश बोडाने , कैलाश पिपलोदिया , गौरव जाट , शैलेन्द्र चौरासिया, जतिन मौर्य , देवांग पंवार, हरीश आर्य , कमलेश बिजवा सहित भाजपा कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

संक्षिप्त समाचार

जिला पंचायत सीईओ ने की समावेशी शिक्षा से जुड़े कार्यों की समीक्षा

सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव की अध्यक्षता में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत एपीसी, आईडी सहित सभी बीआरसीसी और एमआरसी के कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में सीईओ श्रीमती यादव ने समावेशी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की तथा दिव्यांग बच्चों की शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में विशेष बच्चों की पहचान, स्क्रीनिंग, यूडीआईडी कार्ड, गृह आधारित शिक्षा, छात्रावास संचालन, लेप्रोसी क्योर्ड दिव्यांग बच्चों का चिन्हांकन, संसाधन केंद्र सुदृढ़ीकरण, उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग, नए स्कूल सहित अनेक बिंदुओं की विस्तार से समीक्षा की गई और आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। इसके साथ ही समावेशी वातावरण निर्माण में शिक्षकों की भूमिका को सक्रिय बनाने एवं अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के संबंध में भी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। सीईओ श्रीमती यादव ने सभी एपीसी, आईईडी और एमआसी को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने कार्यक्षेत्र में समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रभावी कार्ययोजना बनाएं और समन्वय बनाकर कार्य करें।

कलेक्टर ने वीसी के माध्यम से की उपार्जन कार्य की समीक्षा

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित कर जिले में संचालित गेहूं उपार्जन कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में उन्होंने सभी उपार्जन केंद्रों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसानों से गेहूं खरीदी का कार्य सुचारू एवं पारदर्शी रूप से संचालित किया जाए, ताकि किसी भी किसान को अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि खरीदे गए गेहूं का सुरक्षित भंडारण अत्यंत आवश्यक है, इसलिए उसे व्यवस्थित रूप से गोदाम में रखा जाए, जिससे असामयिक बारिश या अन्य प्राकृतिक कारणों से नुकसान की स्थिति उत्पन्न न हो। कलेक्टर श्री बालागुरू ने उपार्जन केंद्रों पर मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता पर विशेष जोर देते हुए निर्देश दिए कि किसानों के लिए पर्याप्त छाया, पेयजल एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं अनिवार्य रूप से सुनिश्चित की जाएं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि स्लॉट बुकिंग के अनुसार ही किसानों से गेहूं की खरीदी की जाए, ताकि केंद्रों पर अनावश्यक भीड़ न हो और व्यवस्थाएं सुचारू बनी रहें। वीसी में सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं उपार्जन कार्य से जुड़े सभी संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

पॉलिटेक्निक कॉलेज हरदा में डिप्लोमा इंजीनियरिंग के लिए प्रवेश प्रारम्भ

हरदा (निप्र)। हरदा 2 मई 2026/ संचालनालय तकनीकी शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश द्वारा कक्षा 10वीं उत्तीर्ण कर चुके विद्यार्थियों के लिए डिप्लोमा इंजीनियरिंग प्रवेश हेतु समय सारिणी जारी कर दी गयी है। प्राचार्य डॉ अभिरुचि सिंह ने बताया ,प्रथम चरण की काउंसलिंग में भाग लेने के लिए 4 से 29 मई तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है। इसके बाद 15 मई से 2 जून तक विद्यार्थी ऑनलाइन कॉलेज और ब्रांच की चॉइस फिलिंग कर सकते है। मेरिट सूची जारी करने के बाद विद्यार्थी 8 से 13 जून तक आवंटित संस्था में प्रवेश ले सकते हैं। प्रवेश संबंधी अधिक जानकारी के लिए शासकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज हरदा में संपर्क कर जानकारी ले सकते हैं।

निर्धारित स्लॉट की तिथि पर ही उपार्जन केंद्र पहुंचे किसान : जिला प्रशासन की अपील

हरदा (निप्र)। किसानों की सुविधा एवं फसल उपार्जन व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के उद्देश्य से जिला प्रशासन ने सभी किसान भाइयों से अपील की है कि उन्होंने उपार्जन के लिए जिस दिनांक का स्लॉट बुक कराया है, कृपया उसी निर्धारित तिथि पर ही अपनी उपज लेकर उपार्जन केंद्र पहुंचे। स्लॉट की निर्धारित तारीख से पूर्व केंद्र पर आने से अनावश्यक भीड़ बढ़ने की संभावना रहती है, जिससे व्यवस्थाएं प्रभावित हो सकती हैं तथा किसानों को असुविधा का सामना करना पड़ सकता है। जिला प्रशासन ने कहा है कि सभी किसानों के सहयोग से उपार्जन प्रक्रिया को अधिक सुव्यवस्थित, सरल एवं सुगम बनाया जा सकता है। किसानों से अनुरोध किया गया है कि वे निर्धारित तिथि का पालन करते हुए अपनी उपज लेकर केंद्र पहुंचे, ताकि समय पर और सुचारु रूप से उपार्जन कार्य संपन्न हो सके तथा सभी किसानों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना के लिए आवेदन 18 मई तक आमंत्रित

बैतूल (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन जनजातीय कार्य विभाग मंत्रालय भोपाल द्वारा अनुसूचित जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत 18 मई तक आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। योजना के तहत चयनित अभ्यर्थियों को विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। इसमें शोध उपाधि उपरांत अध्ययन, पीएचडी तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शामिल हैं। इस वर्ष योजना के अंतर्गत कुल 50 अभ्यर्थियों के चयन का प्रावधान रखा गया है। जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त ने बताया कि इच्छुक अभ्यर्थी निर्धारित प्रारूप में आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र का प्रारूप एवं योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी जनजातीय कार्य विभाग की आधिकारिक वेबसाइट tribal.mp.gov.in पर उपलब्ध है। अभ्यर्थियों का चयन वर्तमान में प्रचलित नियमों एवं प्रावधानों के अनुसार किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए अभ्यर्थी कार्यालय आयुक्त, जनजातीय कार्य, 59 आदि भवन, अरेरा हिल्स, भोपाल, संभागीय उपायुक्त जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति विकास, अथवा सहायक आयुक्त एवं जिला संयोजक जनजातीय कार्य कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने विदिशा में खरीदी कार्यों की समीक्षा की

खरीदी केंद्रों पर किसान बंधुओं को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी ना हो : केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह

विदिशा (निप्र)। केंद्रीय किसान कल्याण तथा कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज विदिशा के कलेक्ट्रेट स्थित बेतवा सभा का में रबी फसल के उपार्जन (खरीदी) कार्यों की गहन समीक्षा की गई है। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से की गई विदिशा सहित तीन अन्य जिले सीहोर, रायसेन और देवास जिले में क्रियान्वित खरीदी कार्यों की भी समीक्षा की गई।

इस दौरान उन्होंने रबी विपणन वर्ष में चना, मसूर के पंजीयन व उपार्जन कार्यों की भी समीक्षा की है। उन्होंने कहा है कि चना, मसूर के उपार्जन में भी किसानों को किसी भी प्रकार की कोई समस्याएं ना हो। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने बैठक के उपरांत मीडिया को जानकारी सांझा करते हुए कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के भी निर्देश है कि तीव्र गति से उपार्जन (खरीदी) का कार्य किया जाए कृषक बंधुओं को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी ना हो का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि गेहूं खरीदी का कार्य विदिशा जिले में निरंतर जारी है आज विस्तार से विदिशा संसदीय क्षेत्र के जिलों में क्रियान्वित खरीदी कार्यों की स्थिति की समीक्षा की गई है। उन्होंने कहा कि अत्यंत हर्ष की बात है कि स्लॉट बुकिंग निरंतर जारी हैं, 80 प्रतिशत से अधिक किसानों के स्लॉट बुक हो गए हैं। सत्यापन

की समस्या का भी समाधान निकाला गया है खरीदी केंद्रों पर अव्यवस्थाएं उत्पन्न ना हो और किसानों की सुविधाओं को ध्यानगत रखते हुए खरीदी केन्द्रों टर कांटे भी बढ़ाए गए हैं, वारदाना भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है निरंतर बारदाना खरीदी केदो को प्राप्त हो रहा है। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसानों की सुविधाओं को ध्यानगत रखते हुए जिले में कंट्रोल रूम का गठन भी किया गया है ताकि किसान अपनी समस्याओं से अवगत कराएं तो जिला प्रशासन शिकायत का त्वरित समाधान कर सकें। इसके आगे उन्होंने सर्वेयरों के संबंध में कहा कि गड़बड़ी करते पाए जाने पर विदिशा जिले में 34 सर्वेयर हटाए गए हैं और दो सर्वेयर पर एफआईआर दर्ज कराई गई है। उन्होंने स्पष्ट किया है की खरीदी कार्यों में लापरवाही पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए है कि किसानों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी ना हो यही हमारा ध्यैय है। आसानी से किसानों की उपज तुल जाए, उन्हें कठिनाई ना हो, यदि समस्या आती है तो उनका तुरंत हल निकाला जाए। उन्होंने कहा कि खरीदी कार्यों में जो भी आवश्यक जरूरत हैं उनको पूरा करें उन्होंने यह भी कहा कि दलहन फसल मामलों में विदिशा सफल रहा है इसके लिए उन्होंने विदिशा को बधाई दी। साथ ही फार्म गेट का विकल्प बढ़ाने व खरीदी केंद्रों पर किसानों की समस्याओं ना हो इसके लिए पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा समस्त वेयरहाउस पर सामान गुणवत्ता के मानक लागू हो के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि विदिशा जिले में इस बार उपार्जन कार्यों में जिला प्रशासन की टीम द्वारा बेहतर व्यवस्थाएं की हैं इसके लिए भी उन्होंने जिला प्रशासन की पूरी टीम को बधाई दी है।

इस दौरान बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता रघुवंशी, शमशाबाद विधायक श्री सूर्य प्रकाश मीणा, कुरवाई विधायक श्री हरि सिंह सप्रे, विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन, बासौदा विधायक श्री हरि सिंह रघुवंशी, विदिशा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति शर्मा, श्री महाराज सिंह, श्री राकेश जादौन, श्री तोरण सिंह दांगी, श्री श्याम सुंदर शर्मा, श्री राकेश शर्मा, सहित अन्य जनप्रतिनिधि गण तथा कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता, पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी, अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोडिया सहित कृषि संबंध विभाग और अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे, जबकि अन्य जिले सीहोर, रायसेन और देवास के अधिकारी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े रहे।

प्रदेश के 6 लाख घर सौर ऊर्जा से होंगे रोशन : मंत्री श्री शुक्ला

लगभग 2 लाख आवेदन हुए प्राप्त

सीहोर (निप्र)। नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला ने बताया कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना अंतर्गत प्रदेश के 6 लाख घर सौर ऊर्जा से रोशन होंगे। इसके लिए घरों पर सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए वेंडर्स के साथ डिजिटल एग्रीमेंट की व्यवस्था लागू की जा रही है। डिजिटल एग्रीमेंट से लागत में कमी और लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में तेजी से कार्य किया जा सकेगा। मंत्री श्री शुक्ला ने बताया कि प्रदेश में सौर ऊर्जा संयंत्र को स्थापित करने के लिए आम जनता में उत्साह है। अब तक लगभग 2 लाख आवेदन प्राप्त हो गए हैं। निर्धारित लक्ष्य को समय से पहले प्राप्त कर लिया जाएगा। मंत्री श्री शुक्ला ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार नवकरणीय ऊर्जा के विस्तार के लिए दृढ़ संकल्प के साथ कार्य कर रही है। योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड द्वारा हितग्राहियों और वेंडर्स के हितों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न शुल्कों में कमी लाने की विशिष्ट पहल की गई। मंत्री श्री शुक्ला ने बताया कि मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग के समक्ष याचिका प्रस्तुत की गई थी, जिसमें रजिस्ट्रेशन शुल्क, प्रोसेसिंग शुल्क, मीटर जांच शुल्क तथा इंस्टॉलेशन/कमीशनिंग शुल्क में राहत देने और भौतिक अनुबंधों के स्थान पर डिजिटल एग्रीमेंट लागू करने का प्रस्ताव रखा गया था। आयोग द्वारा सुनवाई के बाद डिजिटल एग्रीमेंट लागू करने के आदेश जारी किए गए हैं। मंत्री श्री शुक्ला ने बताया कि आयोग के इस निर्णय से न केवल सौर संयंत्रों की स्थापना लागत में

भैरूंदा एसडीएम सहित राजस्व एवं पुलिस के अधिकारियों ने किया जिले के अनेक नाव घाटों का निरीक्षण

नाव संचालन के दौरान सुरक्षा मानकों का कढ़ाई से पालन करने के दिए निर्देश

सीहोर (निप्र)। गत दिवस जबलपुर जिले के बरगी में नर्मदा नदी पर हुए क्रूज़ हादसे को दृष्टिगत रखते हुए भैरूंदा एसडीएम श्री सुधीर कुशवाह ने भैरूंदा के नर्मदा सीलकंठ नाव घाट का निरीक्षण किया। इसी प्रकार राजस्व एवं पुलिस के अधिकारियों ने कोलार डैम, आंवली घाट सहित अनेक ऐसे घाटों का निरीक्षण किया जहां नाव का संचालन होता है। अधिकारियों ने शाहगंज के बांद्राभान घाट नाविक को लाइफ जैकेट पहनाया और नाव में लाइफ जैकेट उपलब्ध रखने के निर्देश दिए। आंवलीघाट पर नाविकों को नाव संचालन बंद रखने के लिए भी निर्देशित किया गया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने नर्मदा नदी में नाव संचालन के संबंध में ठेकेदार को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि नाव संचालन के दौरान सभी सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि नाव में निर्धारित क्षमता से अधिक लोगों का न बैठाया जाए तथा सभी यात्रियों को अनिवार्य रूप से लाइफ जैकेट उपलब्ध कराई

जाए। उन्होंने यह भी कहा कि नाव संचालन से पहले नाव की तकनीकी जांच नियमित रूप से की जाए तथा अनुभवी नाविकों द्वारा ही नाव चलाई जाए। घाटों पर चेतावनी संकेतक, सुरक्षा बैरिकेडिंग एवं आवश्यक सूचना पट्ट लगाए जाए, ताकि यात्रियों को संभावित जोखिमों के प्रति जागरूक किया जा सके। अधिकारियों ने स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार की लापरवाही पाए जाने पर संबंधित ठेकेदार के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

आधुनिक तकनीकी को अपनाकर बदली युवा किसान कमलेश देशमुख की तकदीर

बैतूल (निप्र)। जिले के मुलताई तहसील के ग्राम डोब के युवा किसान कमलेश देशमुख ने मध्यप्रदेश सरकार की योजनाओं के प्रभावी उपयोग से आधुनिक तकनीकी को अपनाकर खेती को लाभकारी व्यवसाय में बदल दिया है। पारंपरिक खेती से आगे बढ़ते हुए उन्होंने न केवल अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है, बल्कि क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बने हैं।

नौकरी छोड़ खेती को बनाया व्यवसाय

कृषि में स्नातक कमलेश ने तीन वर्षों तक निजी नौकरी करने के बाद खेती को अपनाया। बढ़ती लागत और घटते मुनाफे को देखते हुए उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति अपनाई और खेती को व्यवसाय के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया। जिसमें मध्यप्रदेश सरकार की किसान हितैषी योजनाएं मददगार साबित हुई।

कस्टम हायरिंग सेंटर बना आय का मजबूत आधार

कृषि अभियांत्रिकी विभाग की योजना के तहत उन्हें 9.60 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित किया। यहां ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, सुपर सीडर, रीपर कंबाइनडर, रोटावेटर, रिवर्सिबल प्लाऊ एवं ग्रेडिंग मशीन जैसे आधुनिक यंत्र उपलब्ध हैं। इससे उनकी लागत घटी और आसपास के किसानों को भी सुलभ दर पर मशीनें मिलने लगीं, जिससे क्षेत्र में कृषि कार्यों की गति और दक्षता बढ़ी।

वैल्यू एडिशन से बढ़ी आमदनी

कमलेश ने ई-कृषि यंत्र अनुदान योजना के तहत बैकहो लोडर पर 3.25 लाख रुपये तथा दाल मिल स्थापना पर 1.30 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त किया। दाल मिल से उन्होंने अपनी फसल का मूल्य संवर्धन शुरू किया, जिससे बेहतर बाजार मूल्य मिलने लगा और आय में वृद्धि हुई।दल मिल ग्रेडिंग एवं बैंक हो लोडर को किराए पर चलने से 7.7 लाख का अतिरिक्त मुनाफा प्राप्त किया

पशुपालन से बना स्थायी आय का स्रोत

डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के अंतर्गत 42 लाख रुपये की परियोजना पर 25 गिर गायों के पालन एवं शेड निर्माण के लिए 10 लाख रुपये का बैंक-लिंक्ड अनुदान प्राप्त किया। इससे कृषि के साथ पशुपालन को जोड़कर उन्होंने स्थायी आय का मजबूत आधार तैयार किया।

सुपर सीडर से खेती में क्रांतिकारी बदलाव

मध्यप्रदेश शासन से 1.05 लाख रुपये की सब्सिडी प्राप्त कर उन्होंने जिले की पहली सुपर सीडर मशीन खरीदी , जिसे वे 60 एचपी ट्रैक्टर से संचालित करते हैं। यह मशीन एक साथ नरवाई प्रबंधन, भूमि समतलीकरण, बीज एवं खाद की बुवाई और ढकाई जैसे चार कार्य करती है। इससे समय, श्रम और लागत में भारी कमी आई है।

आंगनवाड़ी केंद्रों में लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का आयोजन

बैतूल (निप्र)। एकीकृत बाल विकास परियोजना बैतूल शहरी के समस्त केंद्रों में 2 मई को लाड़ली उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बालिका सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करना, समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करना तथा मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के लक्ष्यों और लाभों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों के माध्यम से बालिकाओं को लाड़ली आश्वासन पत्र दिए गए। इस अवसर पर लाड़ली बालिकाओं के द्वारा महिला सशक्तिकरण की थीम पर रंगोली बनाई गई। शिवाजी वार्ड में पार्षद श्रीमती आभा श्रीवास्तव द्वारा बालिकाओं को लाड़ली लक्ष्मी के योजना के उद्देश्य के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। उन्होंने महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है, बालिकाओं को उनके आज के आधुनिक समय में सोशल मीडिया के अच्छे और बुरे दोनों स्वरूप को समझाया। इस अवसर पर बालिकाओं के प्रोत्साहन के लिए खेल गतिविधि एवं प्रश्नोत्तरी गतिविधि का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में महिला एवं बाल विकास विभाग की टीम के सांख्यिकीय अन्वेषक श्री योगेश ढोके, पर्यवेक्षक रूपा मिश्रा एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा सहायिका गण उपस्थित रही।

ग्राम बेहलोट में आयोजित की गई जिले की पहली रात्रि चौपाल

कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बेहलोट और खिरिया जागीर के ग्राम वासियों से सीधा संवाद कर जानी गांव के विकास कार्यों की स्थिति

विदिशा (निप्र)। 17:59 ढ्ढस्ञ्ज राज्य शासन से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुपालन में जिला प्रशासन द्वारा 1 मई शुक्रवार की रात्रि में विदिशा जिले की ग्यारसपुर तहसील के ग्राम बेहलोट में जिले की पहली रात्रि चौपाल का आयोजन किया गया। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बहलोट ग्राम पहुंचकर ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याओं को ही नहीं सुना बल्कि ग्राम विकास में ग्रामीणों की भागीदारी कितनी आवश्यक है पर चर्चा की है। बहलोट ग्राम के साथ-साथ पास ही के ग्राम खिरिया जागीर में भी कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के साथ-साथ जिला प्रशासन की टीम पहुंची। जिले की यह पहली रात्रि चौपाल विशेष इसलिए भी रही की कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता] पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी] वन मंडलाधिकारी श्री हेमंत यादव] जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोडिया सहित स्थानीय एसडीएम श्रीमती शशि मिश्रा] तहसीलदार और जिला स्तर के समस्त अधिकारी पुरी जिला प्रशासन की टीम गांव पहुंची थी। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने रात्रि चौपाल में ग्रामीणजनों को संबोधित

करते हुए कहा कि जिला प्रशासन की पूरी टीम जिले के विकास कार्य की और गतिशील है। उन्होंने ग्रामीण नागरिकों से शासन की योजनाओं का लाभ लेने का आव्हान करते हुए कहा कि वह शासन की योजनाओं में आयुष्मान कार्ड] बीमा सुरक्षा योजना] संबल कार्ड सहित स्वरोजगार के लिए ऋण योजनाओं सहित अन्य विभागों की योजनाओं का लाभ लेकर अग्रसर हो। उन्होंने यह भी कहा कि योजनाओं की लाभ प्राप्ति में यदि कुछ समस्या या दिक्कतें उत्पन्न होती हैं तो स्थानीय अधिकारियों के संज्ञान में लाएं ताकि पात्र हितग्राहियों को समय पर योजनाओं का लाभ मिल सके। शासन की योजनाओं की लाभ प्राप्ति में यदि कोई भी व्यक्ति अनावश्यक राशि की मांग करता है तो इसकी शिकायत प्रशासन या 181पर करें। शासन की योजनाओं का लाभ प्राप्ति में कोई भी समस्या आए तो त्वरित अवगत कराएं। उन्होंने विशेष कर बच्चों के अभिभावकों से कहा कि वह अपने बच्चों को स्कूल अवश्य भेजें बच्चे पढ़ाएं लिखाए और बच्चों को अपने उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर करें आज का युग तकनीकी युग है बच्चे नई-नई तकनीक से जुड़ें और आगे बढ़ें। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने ग्रामीण जनों को संबोधित करते हुए साइबर फ्रॉड से बचने की सलाह दी उन्होंने कहा कि आजकल योजनाओं का लाभ दिलाने के नाम पर भी फ्रॉड किया जा रहा है फ्रॉड करने वाले तरह-तरह के हथकंडे अपना कर निजी जानकारी या ओटीपी हासिल करने की कोशिश करते हैं उन्होंने सभी ग्रामीणो से कहा कि किसी भी अनजान व्यक्ति को मोबाइल फोन पर किसी भी प्रकार की निजी जानकारी या ओटीपी देने से बचें।

भाजपा की जीत पर, मप्र में जमकर मना जश्न

● कार्यकर्ताओं ने झालमुड़ी खाई, शिवराज बोले- एक संकल्प पूरा हुआ, मंत्री विजयवर्गीय भावुक हुए

सीएम यादव बोले- बंगाल में अराजकता और टीएमसी के आतंक का होगा अंत

भोपाल (नप्र)। पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुंडुचेरी विधानसभा सीटों पर वोटों की गिनती हुई। ताजा रुझानों में पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु से बड़ा उलटफेर सामने आया है। तमिलनाडु में महज दो साल पहले बनी एक्टर विजय की पार्टी टीवीके ने चौंकाते हुए बढ़त बना ली है। शुरुआती रुझानों में 3 राज्यों में भाजपा की सरकार बन रही थी।

सीएम बोले- आज होली, दिवाली जैसे त्योहारों की तरह आनंद का माहौल

ग्वालियर में सीएम मोहन यादव ने कहा कि होली, दिवाली जैसे त्योहारों की तरह आज आनंद का माहौल है। यह अहंकारियों की पराजय और राष्ट्रवाद की जीत है। मुख्यमंत्री ने पश्चिम बंगाल के संदर्भ में कहा कि वहां घुसपैठियों और देशविरोधी ताकतों के साथ खड़े रहने के कारण जनता ने ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस पर अविश्वास जताया है, जबकि भारतीय जनता पार्टी पर भरोसा किया है।

ममता को 'निर्ममता' की कीमत चुकानी पड़ेगी- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पश्चिम बंगाल की जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व पर भरोसा जताते हुए विकास के लिए भाजपा को चुना है, जिससे राज्य में तेज प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा।

ढोल-नगाड़ों की थाप पर मना जश्न

रुझानों के बीच मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। प्रदेश के अलग-अलग भाजपा कार्यालयों में जीत का जश्न शुरू हो गया है। कहीं कार्यकर्ताओं को झालमुड़ी खिलाई जा रही है तो कहीं ढोल-नगाड़ों की थाप पर जश्न मनाया जा रहा है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन सहित कई शहरों में सड़कों पर कार्यकर्ता नाचते-गाते नजर आए। पटाखे फोड़कर जीत का जश्न मनाया गया। इस दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेता कैलाश विजयवर्गीय भी भावुक नजर आए।

कांग्रेस देश के नक्शे से गायब हो गई : खंडेलवाल

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने मीडिया से कहा कि कांग्रेस देश के नक्शे से गायब हो गई है। झालमुड़ी मेरे लिए नई नहीं है। वो इसलिए क्योंकि कोलकाता में मेरी ससुराल है। उधर, जश्न के लिए पटाखे भी मंगा लिए गए हैं।

मंत्री विजयवर्गीय भावुक हुए, कहा- खुशी का अंदाजा लगाना मुश्किल

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के ऐतिहासिक नतीजों के बाद कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय इंदौर में मीडिया से बातचीत के दौरान भावुक नजर आए। अपने संघर्ष और कार्यकर्ताओं के बलिदान को याद करते हुए उनकी आंखें नम हो गईं।उन्होंने कहा कि यह जीत केवल सीटों का आंकड़ा नहीं, बल्कि दमनकारी शासन के अंत की शुरुआत है। बंगाल में उन्हें जिस तरह निशाना बनाया गया, वह असहनीय था। उनके अनुसार, उन पर गंभीर और झूठे आरोप लगाकर मनोबल तोड़ने की कोशिश की गई। ये आंसू कमजोरी के नहीं, बल्कि अन्याय पर मिली जीत की खुशी के हैं।

खर्च का ब्यौरा नहीं दिया फिर भी लड़ सकेंगे चुनाव

पार्षद का चुनाव लड़ने वाले 16 नेता एक साल के लिए अयोग्य ; राज्य निर्वाचन आयोग ने जारी किए आदेश

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में चुनाव खर्च का ब्यौरा नहीं देने पर राज्य निर्वाचन आयोग ने 28 उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित किया है। 2022 में हुए नगर निकाय चुनाव में इन उम्मीदवारों ने पार्षद पद का चुनाव लड़ा था। हालांकि, इनमें से 12 ही अगला चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। जबकि 16 को एक साल के लिए अयोग्य घोषित किया है, ऐसे में वे अगला चुनाव लड़ सकेंगे।

राज्य निर्वाचन आयोग की अलग-अलग सुनवाई में विदिशा जिले की नगरपालिका विदिशा, नगरपालिका गंजबासौदा, नगर परिषद लटेरी और नगर परिषद कुरवाई में 2022 में चुनाव लड़ने वाले 28 उम्मीदवारों के मामले में अयोग्यता के आदेश जारी किए हैं।

28 अप्रैल को जारी अयोग्यता आदेशों में इन्हें आयोग की सूचना के बाद भी सुनवाई में हाजिर नहीं होने और नोटिस के बाद भी चुनाव खर्च का ब्यौरा न देने पर नगर

पालिक निगम और नगर पालिका अधिनियम के प्रावधानों के आधार पर चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित किया है। बता दें, आगामी नगरीय निकाय चुनाव 2027 में होने वाले हैं।

सभी को अगस्त 2022 तक देना था हिसाब

आयोग के सचिव दीपक सिंह के जारी अलग-अलग आदेशों में कहा है कि चुनाव खत्म होने के बाद अगस्त 2022 तक इन उम्मीदवारों को चुनाव खर्च का हिसाब देना था। इसके लिए नोटिस देकर जानकारी मांगी गई लेकिन ब्यौरा नहीं दिया गया। इसलिए इन्हें नगर निगम, नगरपालिका अधिनियम के अंतर्गत चुनाव लड़ने के लिए अपात्र घोषित किया जाता है।

रीवा-आगर में ओले गिरे, सीधी-अनूपपुर में आंधी का अलर्ट

भोपाल-रीवा और शहडोल में बारिश की चेतावनी ; इंदौर-उज्जैन में अभी गर्मी रहेगी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में सोमवार को भी मौसम बदला हुआ था। रीवा और आगर-मालवा जिलों में बारिश के साथ ओले गिरे हैं। वहीं, मौसम विभाग ने सीधी, अनूपपुर और नीमच में 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी चलने का अलर्ट जारी किया है। वहीं, मंदसौर, भोपाल, आगर-मालवा, राजगढ़, बड़वानी, रीवा, मऊगंज, शहडोल, सागर, दमोह, सिवनी में गरज-चमक के साथ बारिश होने और बिजली गिरने का अलर्ट है। मंडला, रायसेन में भी मौसम बदलेगा। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि प्रदेश में ट्रफ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) की एक्टिविटी है। 7 मई तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा।

सागर, श्योपुर-दमोह में गिरे ओले, 15 जिलों में बारिश- मध्य प्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान 3 जिलों में ओले

गिरे। 15 जिलों में बारिश भी हुई। मौसम विभाग के अनुसार, श्योपुर, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, शिवपुरी, अशोकनगर, सागर, टीकमगढ़, छतरपुर, जबलपुर, नर्मदापुरम, पन्ना, शहडोल, अनूपपुर और बालाघाट जिलों में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश दर्ज की गई।

श्योपुर, सागर और दमोह में ओलावृष्टि हुई। पिछले 24 घंटे के दौरान तेज आंधी का दौर भी रहा। सागर में इसकी रफ्तार सबसे ज्यादा 63 किलोमीटर प्रतिघंटा रही।

भीषण गर्मी का ट्रेंड, लेकिन इस बार बदलाव- एक्सपर्ट्स के मुताबिक, मई महीने में एमपी में भीषण गर्मी का ट्रेंड रहा है, लेकिन इस बार मई की शुरुआत आंधी-बारिश के साथ हुई है। अगले 4 दिन यानी 7 मई तक प्रदेश में ऐसा ही मौसम बना रहेगा।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने अपने मीडिया सलाहकार ताहिर अली को दी शादी की 41वीं वर्षगांठ की शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में अपने मीडिया सलाहकार एवं सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक जनसंपर्क श्री ताहिर अली को उनकी शादी की 41वीं वर्षगांठ के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई दी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ईश्वर से उनके उत्तम स्वास्थ्य, सुखमय एवं दीर्घ दांपत्य जीवन की कामना की। श्री अली ने उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के स्नेह एवं सम्मान के लिए आभार व्यक्त किया।

दिल्ली-जयपुर और लखनऊ में खराब मौसम का असर

भोपाल एयरपोर्ट पर तीन फ्लाइट डायवर्ट, डेढ़ घंटे बाद फिर रवाना

भोपाल/इंदौर (नप्र)। दिल्ली-जयपुर और लखनऊ में खराब मौसम के चलते शनिवार रात और रविवार सुबह कुछ उड़ानों को डायवर्ट कर भोपाल एयरपोर्ट पर उतारा गया। एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी ने बताया कि यह कोई इमरजेंसी लैंडिंग नहीं थी, बल्कि मौसम खराब होने के कारण एहतियातन फ्लाइट्स को भोपाल डायवर्ट किया गया था।

डायरेक्टर के मुताबिक, कुल तीन फ्लाइट्स भोपाल आईं, जिनमें एक एयर इंडिया एक्सप्रेस और दो इंडिगो की थीं। इनमें से दो उड़ानें रात में और एक सुबह के समय पहुंची। मौसम सामान्य होते ही सभी फ्लाइट्स को उनके गंतव्य के लिए रवाना कर दिया गया।

उन्होंने स्पष्ट किया कि इन उड़ानों के यात्रियों को विमान से नहीं उतारा गया था। सभी यात्री फ्लाइट में ही रहे और करीब डेढ़ घंटे के भीतर विमान दोबारा उड़ान भरकर आगे बढ़ गए।

यात्रियों में किसी वीआईपी के होने को लेकर पूछे गए सवाल पर डायरेक्टर ने कहा कि इस बारे में कोई पुष्टि नहीं है, क्योंकि कोई भी यात्री विमान से बाहर नहीं आया था। एयरपोर्ट प्रबंधन के अनुसार, यह पूरी प्रक्रिया सामान्य रही और किसी तरह की आपात स्थिति नहीं बनी।

हमीदिया अस्पताल में 1.6 करोड़ से बनेगी एडवांस मर्चुरी

भोपाल। हमीदिया अस्पताल में लंबे समय से चली आ रही मर्चुरी की समस्याओं का समाधान अब जल्द होने वाला है। यहां एडवांस मर्चुरी बनाने का काम शुरू हो गया है। पुरानी जर्जर बिल्डिंग को जेसीबी से तोड़ दिया गया है और उसी जगह नई अत्याधुनिक मर्चुरी बनाई जाएगी। करीब 1.6 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली इस बिल्डिंग में आधुनिक सुविधाएं होंगी, जिससे न केवल पोस्टमार्टम प्रक्रिया बेहतर होगी, बल्कि चूहों की समस्या से भी राहत मिलेगी। अस्पताल प्रबंधन का कहना है कि नई व्यवस्था से मेडिकल छात्रों और स्टाफ दोनों को बड़ा फायदा मिलेगा।

40 साल पुरानी मर्चुरी अब होगी खत्म- हमीदिया अस्पताल की मौजूदा मर्चुरी करीब 40 साल पुरानी है और लंबे समय से इसके रखरखाव पर ध्यान नहीं दिया गया। हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि यहां लगे कई फ्रीजर ठीक से काम नहीं कर रहे थे। कर्मचारियों के मुताबिक, कई बार चूहों के कारण फ्रीजर के गेट तक खुल जाते थे, जिससे गंभीर स्थिति बन जाती थी। चूहों को रोकने के लिए कई प्रयास किए गए।

बुजुर्ग महिला को बाइक सवार ने टक्कर मारी, मौत

दवा लेकर पैदल घर लौट रही थीं, आरोपी चालक ने ही अस्पताल पहुंचाया था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पॉलिटेक्निक चौराहा पर रविवार रात तेज रफ्तार बाइक सवार युवक ने बुजुर्ग महिला को टक्कर मार दी। घायल महिला को आरोपी चालक ने ही अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान सोमवार तड़के वृद्धा की मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक पार्वती सिंह ठाकुर पति चांद सिंह ठाकुर (77) बाणगंगा प्रताप नगर की रहने वाली थीं। वह दवा लेने के लिए रविवार रात को करीब नौ बजे पैदल घर से पॉलीटेक्निक तक पहुंची। एक मेडिकल स्टोर से ब्लड प्रेशर और सिर दर्द की दवा लेकर लौट रही थीं।

तभी पॉलीटेक्निक चौराहा पर उन्हें बाइक के चालक ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बुजुर्ग महिला को गंभीर चोट आई। बेसुध हालत में आरोपी चालक ने ही महिला को अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

दामाद बोला आरोपी ने खुद को बताया होमगार्ड जवान

मृतका के दामाद भंवरलाल सोलंकी ने बताया कि आरोपी बाइक चालक ही घायल सास को लेकर स्मार्ट सिटी अस्पताल पहुंचा। जहां उसने सास को भर्ती कराया और चला गया। आरोपी ने स्वयं को होमगार्ड का जवान बताया था। उसकी बाइक का नंबर पुलिस को दिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

प्रधानमंत्री की जनहितकारी नीतियों और जनता के अटूट विश्वास से मिली ऐतिहासिक जीतः उप मुख्यमंत्री शुक्ल

पश्चिम बंगाल, पुंडुचेरी और असम में प्रचंड बहुमत पर उप मुख्यमंत्री ने व्यक्त किया हर्ष

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने पश्चिम बंगाल, असम एवं पुंडुचेरी में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को मिली ऐतिहासिक जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह विजय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व, जनहितकारी नीतियों और जनता के अटूट विश्वास का प्रतिफल है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि केंद्र सरकार की जनहितकारी योजनाओं गरीब कल्याण, स्वास्थ्य, आवास, स्वच्छता और वित्तीय समावेशन ने समाज के हर वर्ग तक सीधे लाभ पहुंचाया है। इन योजनाओं ने न केवल लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया है, बल्कि सरकार और जनता के बीच भरोसे को भी मजबूत किया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश में पारदर्शी, जवाबदेह और विकासोन्मुखी शासन स्थापित हुआ है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मंत्र ने हर क्षेत्र में समावेशी विकास को गति दी है, जिसका परिणाम आज चुनावी जीत के रूप में सामने आया है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने इस अवसर पर केंद्रीय नेतृत्व के संगठनात्मक मार्गदर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के कुशल प्रबंधन, सूक्ष्म चुनावी रणनीति और कार्यकर्ताओं के साथ सतत संवाद की शैली ने जमीनी स्तर पर पार्टी को मजबूत किया है। उनके संतुलित और परिणामोन्मुख दृष्टिकोण ने चुनावी प्रक्रिया को सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह जनादेश स्पष्ट करता है कि देश की जनता विकास, स्थिरता और निर्णायक नेतृत्व को प्राथमिकता दे रही है। भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत और जनता के सहयोग ने इस जीत को संभव बनाया है। उन्होंने कहा कि यह जीत जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने की जिम्मेदारी को और बढ़ाती है। भाजपा सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के सशक्त नेतृत्व में पूर्ण समर्पण के साथ जनसेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों को आगे बढ़ाएगी।

समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण करें कार्य, सतत मॉनिटरिंग करेंः उप मुख्यमंत्री

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में रीवा शहर में संचालित जल प्रदाय योजना एवं सीवरेज परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कार्यों की वर्तमान स्थिति, गुणवत्ता, समय-सीमा और वित्तीय विषयों पर विस्तार से चर्चा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी कार्य तय समय-सीमा में पूरे किए जाएँ, ताकि नागरिकों को समय पर बेहतर सुविधाएँ मिल सकें। बैठक में अपर मुख्य सचिव नगरीय विकास एवं आवास श्री संजय दुबे, आयुक्त श्री संकेत भोंडवे तथा नगर निगम रीवा के आयुक्त श्री अक्षत जैन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जल प्रदाय व्यवस्था के अधूरे कार्यों को शीघ्र पूरा करने पर जोर दिया। उन्होंने विशेष रूप से ओवरहेड वाटर टैंक के निर्माण और जल वितरण नेटवर्क के विस्तार को आगामी वर्षा ऋतु से पहले पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने कहा कि कार्यों की निरंतर निगरानी सुनिश्चित की जाए, जिससे समयबद्ध क्रियान्वयन में किसी प्रकार की बाधा न आए। उन्होंने यह भी कहा कि निर्माण कार्यों के दौरान आमजन की दिनचर्या प्रभावित न हो, इसके लिए कार्यों को सुव्यवस्थित एवं चरणबद्ध तरीके से किया जाए। नागरिकों की सुविधा और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने पर भी उन्होंने बल दिया। सीवरेज कार्यों की समीक्षा करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने शेष पाइपलाइन बिछाने और हाउस सर्विस कनेक्शनों को प्राथमिकता के साथ जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए।